दभ्यद्रवत्तमभ्यवदत्कोऽसीति वायुर्वा अहमस्मीत्यब्रवीन्मातरिश्वा वा अहमस्मीति ।।८ ।।

वायुदेव ब्रह्म के पास दौड़ कर गये। ब्रह्म ने पूछा ''तुम कौन हो?'' वायु ने उत्तर दिया ''मैं ही वायु हूँ। मैं ही मातरिश्वा हूँ।''

ॐ

पारस-मणि लोहे को सोना बना देती है; परन्तु वह उसको पारस-मणि नहीं बना सकती, लेकिन सद्गुरु अपने शिष्य को अपने समान ही बना डालता है; अतः वह निश्चय ही अनुपम है। **स्वामी शिवानन्द**

ब्रह्मचर्य-साधना :

गृहस्थों के लिए ब्रह्मचर्य

ह्वह्व परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ह्वह्व

यह बात पूर्णतः असन्दिग्ध है कि ब्रह्मचर्यमय जीवन यशस्कर तथा आश्चर्यकर है। फिर भी, गार्हस्थ्य-जीवन में संयमपूर्ण जीवन आध्यात्मिक विकास के लिए उतना ही लाभकर तथा सहायक होता है । दोनों के अपने-अपने लाभ हैं। आपको इन दोनों में से किसी भी एक पथ पर चलने के लिए बड़े मनोबल की आवश्यकता है।

वर्णाश्रम-धर्म तो आजकल वस्तुतः लुप्त हो चला है। प्रत्येक व्यक्ति वैश्य अथवा बनिया बन गया है और वैध तथा अवैध किसी भी तरह से, याचना, ऋण अथवा स्तैन्य से धन-संचय के लोभ में संलग्न है। प्रायः सभी ब्राह्मण तथा क्षत्रिय वैश्य बन चले हैं। आजकल सच्चे ब्राह्मण तथा क्षत्रिय नहीं रह गये हैं। वे येन-केन-प्रकारेण रुपया चाहते हैं। वे अपने वर्ण अथवा आश्रम-धर्म का पालन करने का प्रयास नहीं करते हैं। मनुष्य के पतन का यही मूलभूत कारण है। यदि गृहस्थ अपने आश्रम के कर्तव्यों को अति-नियमनिष्ठा से निभाते हैं, यदि वह आदर्श गृहस्थ हैं, तो उन्हें संन्यास लेने की आवश्यकता नहीं है। गृहस्थ अपने कर्तव्य-पालन में विफल हो रहे हैं। यही कारण है कि वर्तमान समय में संन्यासियों की संख्या में वृद्धि हो रही है। एक आदर्श गृहस्थ का जीवन उतना ही कठिन तथा कठोर है, जितना कि एक आदर्श संन्यासी का जीवन। प्रवृत्ति-मार्ग अथवा कर्मयोग का मार्ग उतना ही कठिन तथा कठोर है, जितना कि निवृत्ति-मार्ग अथवा संन्यास का पथ है।

यदि व्यक्ति अपने गार्हस्थ्य-जीवन में ब्रह्मचर्य-मय जीवन यापन करता है तथा सन्तान के लिए ही नियमित समय पर सम्भोग करता है, तो वह स्वस्थ, मेधावी, बलवान्, सुरूप तथा आत्म-त्यागी सन्तान का प्रजनन कर सकता है। प्राचीन भारत के तपस्वी तथा ऋषि जन विवाहित होने पर इस उत्कृष्ट नियम का बड़ी ही सावधानीपूर्वक अनुसरण किया करते थे तथा अपने व्यवहार और उपदेश द्वारा शिक्षा दिया करते थे कि गृहस्थ होते हुए भी किस प्रकार ब्रह्मचारी का जीवन यापन किया जाये। हमारे पूर्वज मातृभूमि की रक्षा तथा राष्ट्र के अन्य उत्कर्षकारी कार्यों के लिए सन्तान उत्पन्न करने में निस्सन्देह ऋषियों का अनुसरण करते थे। जिन्होंने श्रीमद्भागवत का स्वाध्याय किया है, वे मनु-पुत्री देवहूति तथा उनके पति कर्दम ऋषि के जीवन से परिचित होंगे। कर्दम ऋषि ने देवहूति को पुत्र-रत्न देने के लिए उनके साथ एक बार सहवास किया, जिससे उनसे सांख्य-दर्शन के प्रवर्तक कपिल मुनि का जन्म हुआ। पराशर ने वेदान्त-दर्शन के प्रवर्तक श्री व्यास को जन्म देने के लिए मत्स्यगन्धा के साथ सहवास किया।

प्राचीन काल के महर्षि जन विवाहित होते थे; किन्तु वे रागमय तथा कामुक जीवन यापन नहीं करते थे। उनका गार्हस्थ्य-जीवन धर्मपरायण जीवन ही होता था। यदि आप उनका अक्षरशः अनुकरण नहीं कर सकते, तो आपको उनके जीवन को मर्यादा के रूप में, एक अनुकरणीय आदर्श के रूप में अपने

सम्मुख रखना चाहिए तथा सन्मार्ग पर चलना चाहिए। गृहस्थाश्रम एक कामुक तथा लम्पट जीवन नहीं है। यह निःस्वार्थ सेवा का, शुद्ध तथा सरल धर्म का, दानशीलता का, साधुता का, स्वावलम्बन का तथा लोक-हित और लोक-संग्रह का अति-नियमनिष्ठ जीवन है। यदि आप ऐसा जीवन व्यतीत कर सकते हैं, तो गृहस्थी का जीवन उतना ही अच्छा है जितना कि संन्यासी का जीवन।

विवाहित जीवन में ब्रह्मचर्य क्या है?

सुव्यवस्थित, संयत विवाहित जीवन यापन करें। गृहस्थ के रूप में भी आप गार्हस्थ्य-धर्म के सिद्धान्तों में लगे रह कर आत्म-संयम तथा भगवान् की नियमित उपासना द्वारा ब्रह्मचारी बने रह सकते हैं। विवाह आपको आपके आध्यात्मिक पथ में किसी भी रूप में अधोगामी न बनाये। आपको अध्यात्म-अग्नि को सदा प्रज्वलित रखना चाहिए। आपको अपनी धर्मपत्नी को भी आध्यात्मिक जीवन की वास्तविक महिमा को समझाना चाहिए। यदि आप दोनों कुछ काल तक ब्रह्मचर्य का पालन करें और तत्पश्चात् असंयम से बचे रहें, तो आपकी धर्मपत्नी हृष्ट-पुष्ट सन्तान का प्रजनन करेगी जो देश के गौरव होंगे। सुरक्षित रखी हुई शक्ति का उच्चतर आध्यात्मिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जा सकता है। बारम्बार के प्रसव की रोकथाम से आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य भी सुरक्षित रहेगा।

गृहस्थ-आश्रम में ब्रह्मचर्य का अर्थ मैथुन पर पूर्ण संयम रखना है। गृहस्थों को यौन-सुख के विचार के बिना, केवल वंश-परम्परा बनाये रखने हेतु माह में एक बार उचित समय पर अपनी पत्नी के साथ सहवास करने की अनुमति है। यह भी ब्रह्मचर्य-व्रत है। वे भी ब्रह्मचारिणी हैं।

गृहस्थों को अपनी पत्नियों को भी उपवास रखने तथा जप, ध्यान और उन सभी अन्य साधनाओं को करने के लिए कहना चाहिए, जिनसे ब्रह्मचर्य-पालन में उन्हें सहायता प्राप्त होती है। उन्हें अपनी धर्मपत्नियों को भी गीता, उपनिषद्, भागवत तथा रामायण के स्वाध्याय तथा आहार-सम्बन्धी नियमों के सम्बन्ध में प्रशिक्षित करना चाहिए।

यदि आप ब्रह्मचर्य पालन करना चाहते हैं, तो आप अपनी पत्नी को अपनी भगिनी समझें तथा अनुभव करें। पति-पत्नी की भावना को नष्ट कर डालें तथा भ्राता और भगिनी की भावना विकसित करें। आप दोनों ही शुद्ध तथा प्रगाढ़ प्रेम विकसित करेंगे; क्योंकि कामुकता की अशुद्धि दूर हो जायेगी। अपनी पत्नी के साथ सदा आध्यात्मिक विषयों की ही चर्चा करें। उनसे महाभारत तथा भागवत के आख्यान कहें। अवकाश के दिनों में उनके पास बैठें तथा धार्मिक पुस्तकें पढ़ कर सुनायें। शनैः-शनैः उनका मन परिवर्तित हो जायेगा। उन्हें आध्यात्मिक साधनाओं में रुचि तथा प्रसन्नता होगी। यदि आप सांसारिक कष्टों से मुक्त होना तथा शाश्वत आत्मानन्द भोगना चाहते हैं, तो इसे कार्यान्वित करें।

आजकल के युवक बाहर जाते समय अपनी पत्नियों को सदा अपने साथ ले जाने में पाश्चात्यों का अनुकरण करते हैं। इस व्यवहार से पुरुषों में स्त्रियों की संगति में सदा-सर्वदा रहने का दृढ़ स्वभाव पड़ जाता है; फिर अल्प काल के वियोग से उन्हें अत्यधिक पीड़ा तथा व्यथा होती है। कई लोगों को पत्नी की मृत्यु से बड़ा आघात लगता है। इसके अतिरिक्त उनके

लिए एक माह के ब्रह्मचर्य-व्रत का संकल्प लेना अतीव कठिन हो जाता है। हे अभागे दुर्बल लोगो, आध्यात्मिक दिवालियो! अपनी जीवन-संगिनियों से जितना अधिक हो सके, दूर रहने का प्रयास कीजिए। उनके साथ कम बातचीत कीजिए। गम्भीर रहिए। उनके साथ हास-परिहास न कीजिए। सायंकाल को भ्रमणार्थ अकेले जाइए। आपके बुद्धिमान् पूर्वजों ने क्या किया? पाश्चात्यों में जो अच्छाइयाँ हैं, उन्हें ही आत्मसात् करें। लोक-व्यवहार, जीवन-पद्धति, पहनावा तथा खान-पान का निकृष्ट अनुकरण अनिष्टिकारक है।

जब पत्नी माँ बन जाती है

जब आपके एक पुत्र उत्पन्न हो जाता है, तो पत्नी आपकी माता बन जाती है; क्योंकि आप स्वयं पुत्र के रूप में उत्पन्न हुए हैं। पुत्र अपने पिता की शक्ति मात्र है। आप अपनी मानसिक अभिवृत्ति को बदल दें। अपनी पत्नी की जगज्जननी के रूप में सेवा करें। आध्यात्मिक साधना आरम्भ करें। काम-वासना को नष्ट कर डालें। आप अपनी पत्नी को काली अथवा जगज्जननी मान कर, प्रातःकाल बिस्तर से उठते ही उसके चरण-स्पर्श करें तथा उसको साष्टांग प्रणाम करें। आप इस कार्य में लज्जा का अनुभव न करें। इस व्यवहार से आपके मन से 'पत्नी'-भाव दूर हो जायेगा। यदि आप शारीरिक रूप से साष्टांग प्रणाम न कर सकें, तो कम-से-कम मानसिक रूप से ही करें।

सन्तानोत्पत्ति के पश्चात् व्यक्ति को कामुकता त्याग देनी चाहिए। उसे ब्रह्मचर्य पालन करना चाहिए। उसे अपनी पत्नी को अपनी माता मानना चाहिए। यदि एक बार इस विचार को मन में प्रमुख स्थान दे दिया, तो वह बच्चे की मृत्यु हो जाने पर भी अपने मानसिक दृष्टिकोण को कैसे बदल सकता है और अपनी पत्नी के विषय में कामुक दृष्टि से सोच सकता है। यह गृहस्थ के लिए एक महान् साधना है। यदि सन्तान न उत्पन्न हो, तो द्वितीय पत्नी के साथ विवाह करना उचित नहीं है। तब पति तथा पत्नी को ब्रह्मचर्य पालन करते हुए आध्यात्मिक पथ पर संयुक्त रूप से आगे बढ़ना चाहिए।

आध्यात्मिक सहभागिता का जीवन यापन

मनु का कथन हैह्न''प्रथम सन्तान धर्म से तथा शेष सन्तानें काम से उत्पन्न होती हैं। विषय-सुख के लिए रतिक्रिया न्यायसंगत नहीं है।'' जो पिपासु साधक आत्म-साक्षात्कार के मार्ग के पथिक हैं और जो चालीस वर्ष से अधिक आयु वाले गृहस्थ हैं, उन्हें अपने पति अथवा पत्नी के साथ सम्भोग करना त्याग देना चाहिए; क्योंकि यौन-संसर्ग सभी असद् भावनाओं को पुनर्जीवित कर देता है और उन्हें जीवन का नया पट्टा प्रदान करता है। विवाह को अब एक सुव्यवस्थित धार्मिक गृहस्थ जीवन यापन द्वारा अपनी प्रकृति के पूर्ण दिव्यीकरण तथा जीवन-लक्ष्यह्न भगवद्-साक्षात्कारह्नकी प्राप्ति के लिए दो आत्माओं का ईश्वर-विहित सम्बन्ध समझना चाहिए। यदि पति तथा पत्नी आशु आध्यात्मिक प्रगति तथा इस जीवन में ही आत्म-साक्षात्कार करना चाहते हैं, तो उन्हें पूर्ण शारीरिक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। आध्यात्मिक मार्ग में अधूरे प्रयास को कोई स्थान नहीं है।

क्या आप चालीस वर्ष से अधिक वय के गृहस्थ हैं? तब तो आपको अब पूर्ण ब्रह्मचारी बन जाना

चाहिए। आपकी पत्नी को भी एकादशी के दिन व्रत रखना चाहिए। अब ऐसा न कहेंह्नह्न‘‘स्वामी जी महाराज, मैं क्या कर सकता हूँ। मैं एक गृहस्थ हूँ।’’ यह झूठा बहाना है। आप एक कामुक गृहस्थ के रूप में कब तक रहना चाहते हैं? क्या जीवनावसानपर्यन्त रहेंगे ? क्या जीवन का खाने, सोने तथा प्रजनन करने से अधिक उदात्त कोई लक्ष्य नहीं है? क्या आप आत्मा के शाश्वत आनन्द का उपभोग करना नहीं चाहते हैं? आप सांसारिक सुखों का पर्याप्त आनन्द ले चुके हैं तथा गृहस्थ-जीवन की अवस्था को पार कर चुके हैं। यदि आप युवक होते, तो मैं आपको छोड़ सकता था; किन्तु अब नहीं। अब संसार में रहते हुए वानप्रस्थ तथा मानसिक संन्यास की अवस्था के लिए तैयार हो जायें। सर्वप्रथम अपने हृदय को रँगें। यह निस्सन्देह एक उदात्त जीवन होगा। अपने को तैयार कर लें। मन को अनुशासित करें।

वास्तविक संन्यास मानसिक अनासक्ति है। वास्तविक संन्यास वासनाओं, ‘मैं-पन’,‘मेरा-पन’, स्वार्थपरता तथा सन्तान, शरीर, पत्नी और सम्पत्ति के मोह का विनाश है। आपको हिमालय की गुहाओं में जाने की आवश्यकता नहीं है। मन की उपर्युक्त स्थिति को प्राप्त करें। अपने परिवार तथा बच्चों के साथ संसार में शान्ति तथा समृद्धि में रहें। संसार में रहें; किन्तु संसार से बाहर रहें। सांसारिकता त्याग दें। यही सच्चा संन्यास है। मैं वास्तव में यही चाहता हूँ। तब आप राजाओं के राजा बन जायेंगे। मैं कई वर्षों से खूब चिल्ला-चिल्ला कर इस प्रकार कह रहा हूँ; किन्तु बहुत ही कम व्यक्ति मेरे उपदेशों का अनुसरण करते हैं।

प्रवृत्ति-मार्ग का अनुसरण करने वाले व्यक्ति के लिए साध्वी पत्नी एक मूल्यवान् रत्न तथा प्रभु की असीम कृपा का मूर्त रूप है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सामंजस्य दम्पति के लिए प्रभु की दुर्लभ देन है। प्रत्येक जीवन-संगी को दूसरे का सभी अर्थों में सच्चा साथी होना चाहिए। गृहस्थाश्रम ईश्वरत्व में विकास की निश्रयणी का सुरक्षित डण्डा है। शास्त्रविहित नियम का पालन करें तथा अनन्त आनन्द का उपभोग करें।

सच्चा मिलन आध्यात्मिक आधार पर ही स्थापित हो सकता है। आपमें से दोनों ही उभयनिष्ठ जीवन-लक्ष्यह्नह्नभगवद्-साक्षात्कार को प्राप्त करने के आकांक्षी बनें। जब आपके चतुर्दिक् रहने वाले दम्पति भौतिकता की तथा अपनी वैयक्तिक हैसियत से एक-दूसरे को नीचे घसीटने की होड़ में लगे हैं, आप दोनों को आध्यात्मिक साधना में शीघ्र उन्नति करने की स्पर्धा करनी चाहिए। यह क्या ही अनूठी स्पर्धा है ! जीवन-संगी के साथ ऐसी प्रतिस्पर्धा क्या ही ईश्वरानुग्रह है! **(अनूदित)**

शिष्य को गुरु की ईश्वर-रूप में सेवा करनी चाहिए, जो कि सर्वेश्वर को प्रसन्न करने तथा उनकी कृपा का अधिकारी बनने का अचूक उपाय है। **स्वामी शिवानन्द**

प्रभु-चरणों में हमारा भाव कैसा हो!

ह्वह्व परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ह्व

आपमें से अधिकांश भगवान् राम के, जानकी, लक्ष्मण और हनुमान् के साथ के चित्रों से परिचित हैं। इन चित्रों में हनुमान् जी सदैव श्री राम के चरणों में बैठे हुए दिखाये गये होते हैंह्वह्व''मैं भगवान् के चरणों में हूँ। मैं प्रभु-चरणों का दास उनके चरणों में बैठा हुआ हूँ।''

और यद्यपि हमने उनके द्वारा लंका में की गयी अनेकों अत्यन्त शौर्यपूर्ण लीलाओं के सम्बन्ध में सुना हुआ है, अनेकों शक्तिशाली असुरों को विजित करके उन्हें मृत्यु की गोद में सुला देने इत्यादि की उनकी असंख्य असाधारण घटनाओं के सम्बन्ध में हम जानते ही हैं, तो भी हम देखते हैं कि भगवान् श्री राम की उपस्थिति में वह सदा ही अपने दोनों हाथ बाँधे हुए, शिर झुका कर नत-मस्तक बैठे हुए हैं; मानो कातर वाणी से कहने को आतुर होंह्वह्व''हे प्रभु! मेरी नहीं, केवल आप ही की इच्छा-पूर्ति हो!''

हनुमान् जी द्वारा अभिव्यक्त जीवन का यह रूप हमारे लिए एक सुशिक्षा है। क्योंकि भगवान् की उपस्थिति में केवल उपासना की ही सम्भावना है और केवल विनम्रता के द्वारा ही किसी की उपासना की जा सकती है। अहं शोभा नहीं देता। अपने स्वाग्रह को, अपनी स्वार्थ-भावना अथवा अहंकार को भगवान् की उपस्थिति में व्यक्त करना अत्यन्त अशोभनीय है।

अपने मानस-पटल पर, अपनी आन्तरिक दृष्टि के सम्मुख सदैव हनुमान् जी का यह चित्र अंकित किये रहें। यदि ऐसा महान् व्यक्तित्व, इतने शक्तिशाली, इतने विकट, इतने दुर्जेय, इतनी शूरवीरता-निर्भीकता और बल से सम्पन्न! यदि वह इतने विनीत सेवक हो सकते हैं, सदैव दास्य भाव से भगवान् की इच्छा पूर्ण करने को तत्पर, उनकी आज्ञा का पालन करने को उद्यत, तब फिर हमारा उनसे कितना अधिक गहन भाव, भगवान् की सेवा में रहने का होना चाहिए ? क्योंकि हम हनुमान् जी की तुलना में हैं ही क्या?

अपने जीवन के इस पहलू पर विशेष रूप से चिन्तन करें! हम सब, भगवान् के सर्वत्र व्यापक होने में विश्वास रखते हैंह्वह्व''आप सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ हैं।'' हमारा विश्वास शुष्क विश्वास नहीं होना चाहिए। मात्र बौद्धिक स्तर पर केवल अपने धर्मग्रन्थों तथा ऋषि-मुनियों और द्रष्टाओं की अनुभूतियों के आधार पर उनके अनुमोदन से ही हम कहते हैंह्वह्व''हम सब नाम-रूपों में आपका ही दर्शन करें।'' क्या इन शब्दों को कहते समय हम उनके भाव को अपने हृदय में अनुभव करते हैं या कि केवल जिह्वा से उच्चारण मात्र ही कर देते हैं। यदि हम हृदय से अनुभव करके यह कहते हैं, यदि यह हमारा विश्वास है और सच्चा यथार्थ विश्वास है, हमारा यह यदि निश्चयात्मक विश्वास है, तब क्या उनकी उपस्थिति में हमारा अहंवादी होना, स्वाग्रही, स्वार्थी, उग्र स्वभाव वाला होना अथवा झगड़ालू या लड़ाका

होना सम्भव होगा ? क्या तब ऐसा होना सम्भव हो सकता है?

यदि भगवान् की सर्वव्यापकता में हमारा विश्वास, एक जीवन्त विश्वास है, यह हमारे लिए एक ऐसा सिद्धान्त बन चुका है जिस पर हम अपना जीवन आधारित किये हुए हैं, तब इस विश्वास के द्वारा, इस सिद्धान्त के द्वारा सुरक्षित, हम उस अन्तर्निष्ठ विद्यमानता में कभी भी उनके प्रति कुछ भी अशोभनीय का चिन्तन तक करने का स्वप्न में भी नहीं सोचेंगे। उनके प्रति, जो शोभनीय न हो, ऐसे एक शब्द का भी उच्चारण करने की कल्पना नहीं करेंगे; उनकी दिव्य उपस्थिति में अशोभनीय किसी भी कार्य को करने का विचार तक मन में नहीं लायेंगे। बल्कि सहज स्वाभाविक रूप से ही, अपने-आप, बिना किसी प्रयास के ही आपका जीवन दिव्य बन जायेगा। आपका जीवन सद्गुण, विनम्रता, सादगी, सेवा-परायणता और भीतर-बाहर से ईश्वरीय सान्निध्य में स्थित होने की भावना से परिपूर्ण हो जायेगा। आपका जीवन एक आदर्श, उदात्त, भला तथा आपको अचिन्तनीय शान्ति प्रदान करने वाला जीवन हो जायेगा।

अत: हम अपने उज्ज्वल अतीत में से अपने सन्त-मनीषियों द्वारा अनुभूत इन महान् सत्यों पर मनन करें! हमारे दैनिक जीवन में, चलते-फिरते और व्यवहार करते हुए इन सत्यों का हम पर कैसा अद्भुत प्रभाव हो सकता है? यह धन्यता प्राप्त कर लेने की कुंजी बन सकते हैं! हमारी भक्ति-भावना से, हमारे अनुशासनपूर्ण, समर्पित आध्यात्मिक जीवन से सम्बन्धित सभी अशोभनीय कार्यों के विरुद्ध यह एक अचूक आश्वासन (गारंटी) बन सकते हैं, और हमें विश्वस्त कर सकते हैं कि हमारे आदर्शों के विरुद्ध कुछ भी, कभी अशोभनीय कार्य हमसे नहीं होगा।

यह सत्य उपेक्षा कर देने के लिए नहीं हैं, असावधानीपूर्वक छोड़ देने के लिए नहीं हैं, उदासीनता दिखाने या तुच्छ समझ लेने के लिए नहीं हैं। यह सत्य तो गहराई से सोचने-विचारने, आत्मसात् करने और अपने नित्य के जीवन में उतार लेने के लिए हैं; यह सत्य तो प्रत्येक पग पर, प्रत्येक पल, सदा-सर्वदा जान लेने, समझ लेने के लिए और ध्यान देने के लिए हैं। तब यह ऐसे सत्य बन जायेंगे जो हमें मुक्त कर दें, जो हमारा रूपान्तरण कर दें, जो हमारे जीवन को दिव्य बना दें। और यही तो हम चाहते हैं। इसी के लिए हम कार्यरत हैं, प्रयत्नशील हैं, इसी के लिए हम जीवन जी रहे हैं। और यह सत्य हमारे जीवन को उदात्त बना सकते हैं, हमारे जीवन के अर्थपूर्ण, जीने के योग्य बना सकते हैं। हमारी साधना को ईश्वरानुभूति प्रदान करके लाभान्वित कर सकते हैं। इसमें किंचित् भी संशय नहीं है।

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

धर्म एक है। ईश्वर एक है। धर्म की वास्तविक भाषा प्रेम की भाषा है। मनुष्य से प्रेम करना और उसकी सेवा करना तथा उस परम दिव्य की पूजा और खोज में जीवन-अर्पण कर देनाह्लह्लयही धर्म का पथ है। संक्षेप में, धर्म का हृदय यही दो बातें हैंह्लह्लसेवा और प्रेम।

स्वामी चिदानन्द

उपनिषद् १

ह्व परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज ह्व

संक्रान्ति-काल

संहिता एवं ब्राह्मण-ग्रन्थों का मुख्य स्वर पवित्रता तथा विधि-विधानों का है। इनके मध्य में यत्र-तत्र धार्मिक भावना एवं चिन्तन के आनन्द का उभार आता है, तो कभी-कभी विश्व-व्यापक परम शक्तिह्वविराट्ह्वके आध्यात्मिक दर्शन भी होते हैं।

वैदिक ऋषियों के विचारों के अन्तःप्रवाह में विश्व के पदार्थों में आध्यात्मिक दर्शन का अर्थ निहित था। 'समग्र विश्व परम पुरुष का यज्ञ है' ह्वचिन्तन के इस चरम बिन्दु तक यज्ञ-सम्बन्धी उनकी धारणा का विस्तार हुआ। फिर भी समाज के उच्च वर्णोंह्वब्राह्मण एवं क्षत्रियों के सामान्य जीवन में भौतिक यज्ञों द्वारा देवों (जिनसे सम्बन्धित स्तोत्र संहिताओं में उपलब्ध हैं) को प्रसन्न करने की इच्छा अधिक महत्ता प्राप्त करती रही।

यज्ञ तथा ऋत और सत्य के नियमों के साथ-साथ संसार पर भी अधिकाधिक चिन्तन किया गया। संसार-सम्बन्धी धारणा का मुख्यार्थ थाह्वकर्म-सिद्धान्त के फल-स्वरूप जन्म ग्रहण करने के कारण प्राप्त सांसारिक अस्तित्व। विचारशील समुदाय को जन्म-जन्मान्तर के चक्र से मुक्ति प्राप्त करने की आवश्यकता प्रतीत होने लगी; क्योंकि यह समझा जाने लगा कि मानव स्व-जीवन में एक नियम में आबद्ध होता है तथा वह उसका उल्लंघन भी करता है। इसी कारण वह पुनर्जन्म को प्राप्त होता है। ब्राह्मण एवं संहिताओं की मूल विचारधारा परिपक्व हो कर नियम भंग करने के कारण उत्पन्न कामनाओं से मुक्ति पाने की आवश्यकता में रूपान्तरित हुई। इसी आवश्यकता को आरण्यकों में तप या आत्म-संयम की संज्ञा दी गयी। अरण्य में एकान्त-जीवन व्यतीत करने वाले तपस्वियों को संहिताओं के स्तोत्रकारों तथा ब्राह्मण-ग्रन्थों के याजकों से अधिक सम्मान प्राप्त होने लगा। वेदों के यज्ञों को बाह्य स्थूल आहुतियों के रूप में देखने की अपेक्षा उन्हें अन्तःध्यान की क्रिया के रूप में देखने की वृत्ति को सबल भूमिका प्राप्त हुई। वेदों के प्रारम्भिक भागों में वर्णित आनुष्ठानिक धर्मचर्या का प्रवाह उपनिषदों में सृष्टि के रहस्यमय चिन्तन की ओर मुड़ गया। उस समय यह भी ज्ञात हुआ कि परिणाम अथवा फल-प्राप्त्यर्थ भौतिक यज्ञ की अपेक्षा अन्तर्यज्ञ अधिक सशक्त है।

सत्य की खोज

अरण्यवासी महात्माओं ने यज्ञों की अपेक्षा ध्यान-प्रक्रिया में अधिक समय देना प्रारम्भ कर दिया और अपनी आध्यात्मिक शक्ति के बल पर इतर जनों से अपनी विशिष्ट महत्ता सिद्ध की। वे अपने को कर्मकाण्डी सिद्धान्तों की रूढ़िगत औपचारिकताओं से असम्बद्ध रखते हुए तप अथवा आत्म-संयम द्वारा प्रकृति पर प्रभुत्व प्राप्त करने का यत्न करने लगे। इस

प्रकार उन्हें संसार की प्रत्येक वस्तु का ज्ञान एक-साथ प्राप्त करने की शक्ति मिली। वे सर्वज्ञ बन गये और उन्होंने बिना किसी अवरोध के ब्रह्माण्ड के विविध क्षेत्रों में आवागमन करने की क्षमता प्राप्त कर ली। कतिपय ऋषियों की आध्यात्मिक शक्ति अंशतः ईश्वर की शक्ति के समान बन गयी और वे स्वेच्छानुसार मात्र दृष्टिपात करके वस्तुओं की सृष्टि, पालन या नाश करने में समर्थ बन गये। उन्होंने ध्यान-प्रक्रिया से ही ब्रह्माण्ड के विविध रहस्यों का उद्घाटन किया और परम तत्त्व-रूप जगदीश्वर परमात्मा के अनुकूल बन सके। मृत्यु पर विजय प्राप्त करके उन्होंने जन्म-मरण से मुक्ति पायी। वे सर्वजयी बने। उपनिषदों के शब्दों में वे सम्पूर्ण विश्व के स्वामी थे अथवा स्वयं ही विश्व-रूप थे। आध्यात्मिक साक्षात्कार का ऐसा महान् गौरव था! इन ऋषियों के दिव्य अनुभव ही आरण्यकों एवं उपनिषदों की विषय-सामग्री बने।

(अनूदित)

सूचना

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, चंडीगढ़
शिवानन्द आश्रम,चंडीगढ़ की द्वितीय वर्षगाँठ
७ व ८ मार्च २०१०

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, चंडीगढ़ शाखा शिवानन्द आश्रम, चंडीगढ़ की द्वितीय वर्षगाँठ ७ व ८ मार्च २०१० को मनाने जा रही है। इस अवसर पर क्षेत्रीय आध्यात्मिक सम्मेलन का भी आयोजन प्रस्तावित है। शिवानन्द आश्रम, ऋषिकेश से वरिष्ठ सन्त-महात्मा अपनी उपस्थिति से इस अवसर पर शोभा बढ़ायेंगे। इस समारोह में सम्मिलित होने के लिए सभी भक्तों को हार्दिक रूप से आमन्त्रित किया जाता है।

पंजीकरण व जानकारी हेतु कृपया सम्पर्क करेंब्रह्म

श्री एफ. लाल. कन्सल, अध्यक्ष, मो. नं. ०९८१४०१५२३७
डा. रमणीक शर्मा, सचिव, मो. नं. ०९८१४१०५१५४

पता : शिवानन्द आश्रम, द डिवाइन लाइफ सोसायटी, चंडीगढ़ शाखा
प्लाट नं. २, सेक्टर २९ ए, चंडीगढ़ब्रह्म१६००३०
दूरभाष : ०१७२-२६३९३२२

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

नीति के पाठ ४

ह्ल परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ह्ल

ईमानदार बनो

छोटी-छोटी बातों में भी ईमानदार बनो। ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है। ईमानदारी मूलभूत गुण है। ईमानदार मनुष्य पर सभी लोग विश्वास करते हैं। उसका सब आदर करते हैं। वह जीवन में विजयी होता है। वह शीघ्र तरक्की करता है। वह अपने उद्योग- व्यापार का तुरन्त विस्तार कर सकता है। वह प्रसिद्ध हो जाता है।

ईमानदार मनुष्य पर ईश्वर कृपा करता है। अधिकारी लोग भी ईमानदार मनुष्य को पसन्द करते हैं। ईमानदार रहोगे, तो तुम्हारा चित्त शुद्ध रहेगा। सुख की नींद आयेगी और स्वास्थ्य ठीक रहेगा। परलोक में स्वर्ग के द्वार तुम्हारे लिए खुले रहेंगे।

रिश्वत न लो। यह बेईमानी है, पाप है। इस कुकृत्य का बुरा फल भोगना पड़ता है। अपनी आय के अन्दर निर्वाह करो। उतना ही पाँव फैलाओ, जितनी लम्बी चादर हो। अपने खर्चे को आमदनी से अधिक न होने दो। सादा जीवन जिओ। तब अधिक धन की अपेक्षा नहीं रहेगी। धन उधार लेना नहीं पड़ेगा। रिश्वत लेने का प्रलोभन नहीं रहेगा।

लक्ष्य पर दृढ़ रहो

जल्दी सो कर जल्दी उठने से मनुष्य स्वस्थ, समृद्ध और बुद्धिमान् बनता है। वचन देने में जल्दबाजी न करो, पर दिया हुआ वचन पूरा करने में विलम्ब न करो। वक्त का एक टाँका नौ टाँकों से अच्छा है। 'तब पछताये होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गयीं खेत।' एकता में बल है।

एक हँसी हजार रोगों का उपचार है। दान के बछड़े के दाँत नहीं गिने जाते। चीजें जैसी दीखती हैं, असल में वह वैसी नहीं हैं। अहंकार वायुवेग से आता है, चींटी की चाल से जाता है। उपदेश देना आसान है, उस पर अमल करना कठिन।

रोग का इलाज करने से बेहतर है, उससे बचाव करना। जो-कुछ भी है, वह ईश्वर है। सभी चमकने वाली वस्तुएँ सोना नहीं होतीं। बिना सेवा के मेवा नहीं। ईश्वर में श्रद्धा रखो और भला काम किये जाओ। समय सबसे मूल्यवान् है।

प्रोफेसर बनो

वकील या पुलिस आफिसर न बनो। प्रतिदिन असंख्य बार झूठ बोलना पड़ेगा। रोज कई गलत काम करने पड़ेंगे। इससे आत्मा का हनन होगा।

डाक्टर बनो या प्रोफेसर बनो या किसान बनो। प्रोफेसर बनोगे, तो खूब अवकाश मिलेगा। शान्त और धर्ममय जीवन जी सकोगे। प्रतिदिन जप, कीर्तन और ध्यान के लिए पर्याप्त समय मिलेगा।

अपनी खेती का ध्यान रखो। उससे खूब धन मिलेगा। इसमें स्वावलम्बन है। डाक्टरों का पेशा उत्तम है, लेकिन मोटी फीस न लेना। गरीबों का उपचार नि:शुल्क करो। **(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)**

बाल-स्तम्भ :

बुराई का बदला

ह्वह्व स्वामी रामराज्यम् ह्वह्व

पुरानी घटना है।

कलकत्ता में एक सेठ ने अपने चौकीदार रामशरण को उस पर चोरी का झूठा अभियोग लगा कर नौकरी से निकाल दिया। रामशरण ने उन्हें लाख समझाने की कोशिश की कि वह निर्दोष है, लेकिन सेठ नहीं समझे। उन्होंने एक दूसरा चौकीदार रख लिया। उसका नाम कालीचरण था। उन दिनों चौकीदार दिन के समय दुकानों पर काम करते थे, आधी रात तक उधार दिये गये माल के रुपये वसूलते थे और रात के समय अपनी-अपनी दुकानों के आगे सो जाया करते थे।

एक रात की बात है। कालीचरण रुपये वसूल करके अपनी दूकान को लौट रहा था। उसके पास बीस हजार रुपयों की थैली थी। रास्ते में लुटेरों ने उसे पकड़ लिया और उससे थैली छीन ली। कालीचरण चिल्लाने लगा। संयोग से रामशरण उसी रास्ते से आ रहा था। उसने कालीचरण की आवाज सुनी तो उसे बचाने के लिए दौड़ा। कालीचरण तक पहुँचते-पहुँचते रामशरण को थोड़ी देर हो गयी। इसी बीच इशारों से बात करके लुटेरों ने कालीचरण को उस धन में से कुछ हिस्सा लेने के लिए राजी कर लिया। कालीचरण तो चुप हो गया लेकिन रामशरण शोर मचाने लगा। लुटेरों ने उससे कहाह्वह्व''तुम चुप हो जाओ। कालीचरण के साथ- साथ हम तुम्हें भी कुछ हिस्सा दे देंगे।''

रामशरण गुस्से से बोलाह्वह्व''तुम मेरे सामने मेरे मालिक का नुकसान करोगे?''

अब कालीचरण धीमी आवाज में बोलाह्वह्व ''अब सेठ तेरे मालिक कहाँ रहे? उन्होंने ही तो तुझे निकाल दिया था।''

''तो क्या हुआ?'' रामशरण बोलाह्वह्व''उन्होंने मेरे साथ बुराई की, तो क्या मैं भी उनके साथ बुराई करूँ?''

इस बीच कुछ और लोग भी आ गये। उन्होंने लुटेरों से थैली छीन ली। लुटेरे भाग गये। कालीचरण ने सोचा कि रामशरण सेठ से मेरी शिकायत कर देगा। वह भी भाग गया।

रामशरण रुपयों की थैली ले कर सेठ के पास पहुँचा और उनकी कोठी का फाटक खटखटाने लगा। रात के एक बज रहे थे। रामशरण की आवाज सुन कर सेठ को आश्चर्य हुआ। वह अन्दर से बोलेह्वह्व''यह कोई आने का टाइम है?''

''आप फाटक तो खोलिए'' रामशरण ने कहा।

सेठ ने फाटक खोला। रामशरण ने उन्हें रुपयों की थैली थमायी और पूरी-पूरी बात बता दी। सेठ

को ऐसा लगा कि वह सपना देख रहे हैंह्लह्लजिसे उन्होंने नौकरी से निकाल दिया था, उसी ने उनके साथ भलाई की!

सेठ की आँखों में आँसू आ गये। वह उसे अपनी बाहों में ले लेने के लिए आगे बढ़े। रामशरण एक कदम पीछे हट गया और बोलाह्लह्ल''सेठ जी, मैं वही रामशरण चोर हूँ।''

सेठ रोने लगे। बोलेह्लह्ल''रामशरण, मुझे माफ कर दो। मैं गुनाहगार हूँ।''

रामशरण को सेठ अपनी कोठी में लिवा ले गये और बहुत देर तक उसके पास बैठे-बैठे आँसू बहाते रहे।

रामशरण ने कहाह्लह्ल''सेठ जी, मैं विद्वान् नहीं हूँ लेकिन इतना जानता हूँ कि खुद बुराई नहीं करनी चाहिए और जो बुराई करे उसके साथ भलाई करके उसकी बुराई का बदला चुकाना चाहिए।''

बच्चो, बुराई का बदला चुकाने के इस तरीके को तुम भी अपनाओगे न?

✂ ✂ ✂

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्त:शक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

पूर्णकुम्भ–समारोह

ह्वह्व परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ह्वह्व

राशि–चक्र में कुम्भ ग्यारहवीं राशि है। ग्रहों का एक विशिष्ट योग होने पर हरिद्वार, प्रयाग, नासिक तथा उज्जैन में से किसी एक स्थान पर हर बारहवें वर्ष कुम्भमेला लगता है। प्रत्येक दो पूर्णकुम्भों के बीच अर्ध–कुम्भ का मेला लगता है।

पूर्णकुम्भ–समारोह (मेला) बृहस्पति और कुम्भ का योग होने पर हरिद्वार में, बृहस्पति तथा मेष का योग होने पर प्रयाग में, बृहस्पति तथा कर्क का योग होने पर नासिक में एवं बृहस्पति तथा तुला का योग होने पर उज्जैन में आयोजित किया जाता है। समारोह की अवधि में कुछ विशिष्ट तिथियाँ स्नान करने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मानी जाती हैं। भारतवर्ष के कोने–कोने से लाखों की संख्या में भक्त गण इस अवसर पर पावन स्नान करने के उद्देश्य से एकत्रित होते हैं।

प्राचीन काल में जन–साधारण के नैतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान के लिए कुम्भमेलों का श्रीगणेश किया गया था। तपश्चर्या में रत सन्त, महात्मा, योगी तथा आध्यात्मिक गुरु कुम्भमेले की अवधि में इन स्थानों पर एकत्रित हुआ करते थे तथा गृहस्थों एवं आध्यात्मिक साधकों को आध्यात्मिक ज्ञान का उपदेशामृत वितरित किया करते थे। भक्त गण उनके श्रीचरणों के निकट बैठ कर उनके पावन उपदेश का श्रवण किया करते थे। वहाँ धार्मिक कक्षाएँ संचालित की जाती थीं, प्रवचन–कार्यक्रम आयोजित किये जाते थे तथा योग और मोक्ष के जिज्ञासु साधकों को योग और मोक्ष के रहस्यों में दीक्षित किया जाता था।

पौराणिक परम्परा के अनुसार समुद्र–मन्थन के समय जब असुर अमृत–कलश ले कर भागे, तब कलश से अमृत की बूँदें १२ स्थानों (स्वर्ग के ८ स्थानों तथा पृथ्वी के ४ स्थानों) पर गिरीं। पृथ्वी के ये चार स्थान हरिद्वार, प्रयाग, नासिक तथा उज्जैन ही हैं जहाँ कुम्भमेले आयोजित किये जाते हैं। आध्यात्मिक महत्त्व के विषयों पर विचार–विनिमय करने, आध्यात्मिक अनुभवों का आदान–प्रदान करने तथा गृहस्थों एवं साधकों को आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करने हेतु ऋषि–मुनि एवं महात्मा आदि किसी निश्चित अवधि में, निश्चित स्थान पर एकत्र हो सकें, इस उद्देश्य की पूर्ति में कुम्भमेलों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। यदि इन मेलों में आध्यात्मिक शिक्षण को व्यवस्थित रूप दिया जा सके, तो मानवता के लिए ये मेले वरदान सिद्ध होंगे।

कुम्भमेले में सभी प्रकार के लोग पहुँचते हैं; परन्तु उनमें आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत महापुरुष, महामण्डलेश्वर, विद्वज्जन भी पहुँचते हैं जो साधकों का मार्ग–निर्देशन करते हैं। इस अवसर पर एकान्त स्थलों पर, भीड़ से दूर विरक्त महात्माओं तथा त्यागी सन्तों के भी दर्शन प्राप्त हो जाते हैं। साधु–संन्यासियों, योगियों तथा नागा बाबाओं के बीच इन एकान्तवासियों को ढूँढ़ कर उनके दर्शन करने

चाहिए। इनके अमूल्य वचन आपके मार्ग-दर्शक बनेंगे। इनके निर्देश आपका उत्थान करेंगे।

इस पूर्णकुम्भ-समारोह में भाग लेते हुए आपको कुछ लाख की संख्या में जप अवश्य करना चाहिए। इस पावन अवसर पर किये गये जप का प्रभाव अनूठा ही होता है तथा आपको आध्यात्मिक लाभ प्रदान करता है। १५ या ३० दिनों के लिए आप कोई अनुष्ठान भी करें। फल और दूध का आहार लें। गीता, उपनिषद्, रामायण तथा भागवत का स्वाध्याय करें। साधु-सन्तों का सत्संग करें। निरुद्देश्य भ्रमण न करें। मौन-व्रत रखें। इस व्रत से आपका आध्यात्मिक विकास होगा। दानशीलता आपके अनेकानेक पापों को नष्ट करती है; अतः प्रचुर मात्रा में दान करें। कुम्भमेले में भाग लेने से आपको निष्काम कर्मयोग का अनुपम अवसर प्राप्त होता है। इस अवसर को न खोयें। साधु-महात्माओं की सेवा करें। रोगियों की सेवा करें। निष्कपट तथा उत्साही साधकों एवं निःस्वार्थी तथा जिज्ञासु महात्माओं के लिए कुम्भमेला आत्मज्ञान प्राप्त करने तथा प्रदान करने का भी एक सुअवसर है। इस मेले में आज जो-कुछ प्राप्त करते हैं, वह आपकी उस मनःस्थिति पर निर्भर करता है जिसमें रहते हुए आप इसमें भाग लेते हैं।

ईश्वर आपको सुख, शान्ति, परमानन्द, अमरत्व एवं दीर्घकालिक और ठोस साधना करने की क्षमता प्रदान करे! **(अनूदित)**

सूचना

महाशिवरात्रि

पवित्र महाशिवरात्रि शिवानन्द आश्रम, शिवानन्दनगर में **१२ फरवरी २०१०** को मनायी जायेगी। श्री विश्वनाथ मन्दिर में दिन में और सारी रात्रि समवेत स्वर में पंचाक्षर-मन्त्र **('ॐ नमः शिवाय')** के अखण्ड कीर्तन के अतिरिक्त अभिषेक, सहस्रनामार्चना तथा रुद्र, नमक, चमक, पुरुषसूक्त, नारायणसूक्त और श्रीसूक्त के पाठ के साथ भव्य पूजा की जायेगी। इस व्रत में सम्मिलित होने के विचार से हमें यथेष्ट समय पूर्व अवगत करा कर आने वाले भक्तों का हार्दिक स्वागत है। उन्हें अपने आने की सूचना **'जनरल सेक्रेटरी, द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शिवानन्द आश्रम, पो. शिवानन्दनगर २४९ १९२, जिला टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड'** को दे देनी चाहिए। जो स्वयं न सम्मिलित हो सकें, वे **'व्यवस्थापक, मन्दिर डिपार्टमेन्ट, द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शिवानन्द आश्रम, पो. शिवानन्दनगर २४९ १९२, टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड'** को अपनी इच्छा से सूचित कर देंगे, तो उनके नाम से भी पूजा की जायेगी।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

शिवरात्रि-महिमा

ह्वह्व परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ह्वह्व

पार्वतीपति भगवान् शिव को प्रणाम है! ब्रह्म की संहारकारी शक्ति को प्रणाम है! जो शम्भू, शंकर, महादेव, सदाशिव, विश्वनाथ, हर, त्रिपुरारि, गंगाधर, शूलपाणि, नीलकण्ठ, दक्षिणामूर्ति, चन्द्रशेखर, नील-लोहित इत्यादि नामों से जाने जाते हैं, जो अपने भक्तों पर शुभता, अमरत्व और दिव्य ज्ञान की वृष्टि करने वाले हैं, जो प्रलय-काल में ताण्डव नृत्य करते हैं और जो संहारकारी नहीं प्रत्युत पुनरुज्जीवन प्रदाता हैं, उनको हम मौन प्रणाम करते हैं!

महाशिवरात्रि का अर्थ हैह्वह्वभगवान् शिव का ध्यान करने वाली महानिशा। महाशिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को (फरवरी-मार्च मास में) पड़ती है।

महाभारत के शान्ति-पर्व में भीष्मपितामह जब शर-शैया पर लेटे हुए धर्मोपदेश कर रहे थे, उस समय वे राजा चित्रभानु को महाशिवरात्रि व्रत करने का उपदेश देते हैं।

एक बार समस्त जम्बूद्वीप पर जब ईक्ष्वाकू वंश के राजा चित्रभानु का राज्य था, तब वह और उनकी पत्नी महाशिवरात्रि का उपवास किये हुए थे। उस समय ऋषि अष्टावक्र उनके राजदरबार में आये।

ऋषि ने प्रश्न कियाह्वह्व''हे राजन्! आपने आज उपवास क्यों किया है?'' तब राजा चित्रभानु ने यह व्रत रखने का कारण बताया। उसको अपने पूर्व-जन्म की स्मृति रहने का वर प्राप्त था।

उसने अष्टावक्र ऋषि से कहाह्वह्व''मैं अपने पूर्व-जन्म में सुस्वर नामक व्याध था। पशु-पक्षियों को मार कर बेचना ही मेरी आय का साधन था। एक दिन मैं शिकार की खोज में वन में भटक रहा था। आखेट करते-करते रात्रि का अन्धकार छा गया। मार्ग न सूझ पाने से घर लौटने में असमर्थ हो, हिंस्र जन्तुओं के आक्रमण के भय से वृक्ष पर चढ़ गया। वह बिल्व का वृक्ष था। मैंने एक मृग का शिकार किया था; किन्तु उसे घर ले जाने का समय नहीं मिला था। अत्यधिक क्षुधा और पिपासा से आक्रान्त होने के कारण मैं रात्रि-भर जागता रहा। यह चिन्ता करते-करते कि मेरी पत्नी और बच्चे मुझे न पा कर किस दशा में भूखे- प्यासे तड़प रहे होंगेह्वह्वमैं फूट-फूट कर रोने लगा और व्याकुलता में वृक्ष के पत्ते तोड़ता रहा। उस बिल्व-वृक्ष के मूल में एक शिवलिंग था। मेरे अश्रु और बेल-पत्र शिवलिंग पर मेरे अनजाने ही गिरते रहे।

''प्रात: हुई। मैं घर पहुँचा और आखेट किया मृग बेचा। परिवार और अपने लिए भोजन का सामान लाया। मैं व्रत खोलने वाला ही था कि एक अज्ञात व्यक्ति आया और मुझसे कुछ खाने के लिए माँगने लगा। मैंने पहले उसे भोजन दिया, फिर स्वयं खाया। अपनी मृत्यु के समय मैंने भगवान् शिव के दो गण देखे। वह दोनों भगवान् द्वारा मेरी जीवात्मा को शिवलोक ले जाने के लिए भेजे गये थे। तब मुझे प्रथम बार महाशिवरात्रि के दिन उपवास करने की महिमा का ज्ञान हुआ, यद्यपि मैंने तो वह उपवास अनजाने में संयोग से ही किया था। मैंने दीर्घ काल तक शिवलोक में रह कर दिव्य आनन्द का उपभोग किया और अब पुन: इस संसार में चित्रभानु के रूप में उत्पन्न हुआ हूँ।''

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

श्री गुरुदेव की अपार कृपा से तथा श्री स्वामी जी महाराज की अनन्त दया से दिव्य जीवन संघ मुख्यालय अपने ही एक अंग 'शिवानन्द होम', जो कि लक्ष्मणझूला के निकट तपोवन में स्थित है, के द्वारा सतत विनम्र सेवा में संलग्न है। यह ऐसे घर-बार से विहीन निर्धन रोगियों को चिकित्सीय सेवा उपलब्ध कराता है जिन्हें भरती हो कर इलाज कराने की आवश्यकता रहती है।

वे चार लोग थे। चारों मित्र गंगा में स्नान करने के लिए फ़िरोजाबाद से आये थे। किन्तु परिस्थितियाँ पल-भर में बदल जाती हैं; क्षण-भर में ही व्यक्ति का जीवन पूरा पलट सकता है। चारों मित्रों में से एक 'कमल भैया' नाम के व्यक्ति का नदी में प्रवेश करते समय पैर फिसल गया और वह भीतर चट्टान से जा टकराया। उसके शिर पर गहरी चोट लगी और वह किसी भी तरह से बाहर निकल नहीं पा रहा था, अन्य तीनों व्यक्ति सहायता और दवाई लाने का बहाना करके वहाँ से ऐसे भाग निकले कि लौटे ही नहीं। घण्टों तक उसकी टाँगें और बाहें ठण्ढे-बरफीले जल में डूबी रहीं। निरन्तर वह भगवान् से प्रार्थना करता रहा, दया की भीख माँगते हुए कि भगवान् उसे भुलायें नहीं! अपनी कृपा-वृष्टि करें! अपनी विद्यमानता दर्शायें! अपनी करुणामयी फुसफुसाहट सुनायें! और देखिए, लगभग पाँच घण्टों बाद (उसके अनुमान से) चार साधु बाबा उसे बचाने के लिए पहुँच गये। अत्यन्त कठिनाई से वे किसी-न-किसी प्रकार उसे किनारे तक ले आने और फिर 'शिवानन्द होम' में भरती कराने में सफल हो गये। जब यहाँ पहुँचा तो वह मानसिक आघात की अवस्था में था। अल्प ऊर्जा (हाइपोथरमिया) के कारण उसके हाथ-पैर संवेदनाहीन हो चुके थे और स्तम्भित हो गये थे। परीक्षण के उपरान्त सही इलाज शुरू हो जाने पर, परमात्मा की कृपा से रोगी की दशा में सुधार हो रहा है।

ॐ श्री सद्गुरुदेवाय नमः! ॐ श्री शंकराचार्याय नमः! ॐ श्री गंगादेव्यै नमः!

''बहुत-सी बातें जीवन में हैं
जो हम समझ नहीं पाते,
पर भगवान् के निर्णय पर हमेंह्न
विश्वास होना ही चाहिए;
और 'उनके' निर्देशन में चलना चाहिए।
और भी जिन पर 'उनकी' कृपा है
सब 'उनकी' सुरक्षा में निश्चिन्त रह सकते हैं।
क्योंकि 'विश्वास और प्रार्थना के पंखों' पर
'वह' सुरक्षित यात्रा का वायदा करते हैं।''

(हैलेन स्टेनर राइस)

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' **स्वामी शिवानन्द**

परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

मलेशिया दिव्य जीवन संघ के अध्यक्ष, परम पूज्य श्री स्वामी गुहभक्तानन्द जी महाराज के स्नेहपूर्ण आमन्त्रण के प्रतिभाव में, परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने दिनांक ७ नवम्बर से दिनांक १९ नवम्बर की अवधि में मलेशिया की मुलाकात ली। स्वामी जी महाराज दिनांक ७ नवम्बर को कोला लाम्पुर पहुँचे। उसी सन्ध्या को स्वामी जी महाराज ने 'तडिका शिवानन्द' के स्नातक-समारोह में उपस्थिति दी। स्वामी जी महाराज ने 'शिक्षा का महत्त्व' विषयक, अभिभावकों तथा छात्रों को प्रवचन दिया। आधिक्य में, स्वामी जी महाराज ने १२० छात्रों को स्नातक-प्रमाणपत्र प्रदान किये। पश्चात् स्वामी जी महाराज ने युवा-कार्यक्रम में उपस्थिति दे कर, युवा-विभाग द्वारा भजन-प्रस्तुति होने के बाद, 'जीवन में छात्रों का साफल्य' विषय पर, सम्बोधन किया। स्वामी जी महाराज ने दिव्य जीवन संघ की 'जोहोरे बारु' उपशाखा से दिनांक ८ को भेंट की तथा 'भगवद् गीता का सन्देश' के विषय में व्याख्यान दिया। दिनांक १० को, स्वामी जी महाराज 'पिटालिंग जाया' उपशाखा के कार्यक्रम में उपस्थित रहे। भजन-सत्र के अनन्तर सदस्यों के साथ स्वामी जी महाराज का प्रश्न-उत्तर कार्यक्रम था। दिनांक ११ को स्वामी जी महाराज ने प्राई उपशाखा की ओर प्रस्थान किया एवं 'दिवान दातो' अहमद बड़वाई हाल में श्रोताओं को, 'योगह्वह्वएक सार्वत्रिक विज्ञान' विषय पर सम्बोधन किया। प्रस्तुत कार्यक्रम दिव्य जीवन संघ की प्राई उपशाखा, सुंगाई करंगन उपशाखा, पेनांग उपशाखा और अलोर स्टार उपशाखा द्वारा संयुक्त उपक्रम निमित्त आयोजित किया गया था। अगले दिन, स्वामी जी महाराज ने दिव्य जीवन संघ की इपोह उपशाखा से भेंट कर, राज्य सेक्रेटरिएट हाल में एक जाहिर कार्यक्रम में उपस्थित रह कर 'आन्तरिक शान्ति' के विषय में भक्तों को सम्बोधित किये। स्वामी जी महाराज की मुलाकात का प्रमुख केन्द्र, आवाना जेन्टींग हाईलॅन्डस द्वारा 'ध्यान और योगह्वह्वउपचार के रूप में' विषयक परिचालित दो दिवसीय कार्यक्रम था।

स्वामी जी महाराज ने 'ध्यान', 'स्वस्थ तनाव-मुक्त जीवन-पद्धति', 'योग द्वारा विषाणुमुक्ति' तथा 'जीवन प्रति सर्वांगी और समग्रतया अभिगम' आदि विषयों पर परिचर्चा और विविध व्याख्यान दिये। स्वामी जी महाराज ने बाटुकेव्ज में 'साधना का महत्त्व' पर प्रवचन किया। अगले दिन, स्वामी जी महाराज केकेबी उपशाखा के कार्यक्रम में उपस्थित रहे तथा 'भगवद् गीता का नीति-रीति का शास्त्र' विषय पर व्याख्यान दिया। दिनांक १८ को, स्वामी जी महाराज ने दिव्य जीवन संघ की बाटुकेव्ज शाखा के शिवानन्द आश्रम में योग-छात्रों के साथ परिचर्चा की। स्वामी जी महाराज की यह मुलाकात अति सफल रही, क्योंकि सब कार्यक्रमों में भली-भाँति उपस्थिति थी।

दिनांक २० से दिनांक २१ पर्यन्त स्वामी जी महाराज सिंगापुर में रहे, कुछ मित्रों से मिले और आदरणीय श्री एच. आर. भोंसले जी द्वारा आयोजित सत्संग का उन्होंने परिचालन किया।

दिनांक २२ नवम्बर से दिनांक ३० नवम्बर की दिनावधि में स्वामी जी महाराज ने हांगकांग की मुलाकात ली एवं दिव्य जीवन संघ की हांगकांग शाखा (योग केन्द्र) द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में उपस्थित रहे। स्वामी जी महाराज ने चेंग चाउ टापु पर आयोजित योग-शिविर में उपस्थिति दी। स्वामी जी महाराज अध्ययन-मण्डली द्वारा (स्टडी ग्रुप द्वारा) विविध भक्तों के निवासस्थानों पर

आयोजित सत्संग में उपस्थित रहे और उन्होंने 'भगवद् गीता तथा विवेक चूडामणि के उपदेशों' पर वक्तव्य दिये।

दिव्य जीवन संघ की हांग कांग शाखा ने परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज को, दिनांक २२ नवम्बर से दिनांक १ दिसम्बर २००९ की समयावधि में हांग कांग के निवासियोंक्को गुरुदेव की शिक्षाओं से ज्ञात करके, उनके प्रसार हेतु, आमन्त्रण दिया था।

दिनांक २३ नवम्बर को (७-८:३० रात्रि में) पूज्य स्वामी जी महाराज ने मोंगकोक योग-केन्द्र में ९६ प्रतिभागियों की प्रतिभागिता में 'शरीर-विज्ञान तथा मनोविज्ञान में योग और स्वाध्याय' विषयक एक जाहिर प्रवचन दिया।

दिनांक २४ और २५ नवम्बर को (७-८:३० रात्रि में) आदरणीय श्री स्वामी जी महाराज ने 'प्राणायाम-विज्ञान' के विषय पर अनुक्रमिक प्रवचन दिये। ये उभय प्रवचन योग-शिक्षक तालीम पाठ्यक्रम के अन्तर्निहित थे, जिनमें ५४ प्रतिभागी उपस्थित थे।

दिनांक २५ नवम्बर (८:३० से ९:०० रात्रि में) को पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने हांग कांग के केन्द्र द्वारा आयोजित 'योग-शिक्षक तालीम पाठ्यक्रम (आसन और प्राणायाम)' के प्रतिभागी तथा योगासन-प्राणायाम सिखाने में योग्यता-प्राप्त ऐसे १४ योग-शिक्षकों को प्रमाण-पत्र प्रदान किये।

दिनांक २६ नवम्बर को प्रभात में शाखा के समिति-सदस्यों, भक्तों तथा योग-साथियों सहित पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने विख्यात बौद्ध मन्दिर, ची मिन ननरी तथा समीप में ही कुवालून में डायमंड हिल पर स्थित नान-लियान गार्डन की मुलाकात लीं। इस पर्यटन में २८ प्रतिभागी थे।

शाखा ने दिनांक २७ से दिनांक २९ नवम्बर पर्यन्त एक योग-सेमिनार सम्पन्न किया। तीन दिवसीय इस सेमिनार की पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने स्व-उपस्थिति से शोभा में अभिवृद्धि की। सेमिनार में ७३ प्रतिभागी उपस्थित थे। सेमिनार का विषय था, 'भक्ति-योग'। परम पूज्य स्वामी जी महाराज के मार्गदर्शन में इस सेमिनार का प्रारम्भ प्रातः ५:०० के समय से श्लोक- स्तोत्र पाठ तथा ध्यान से हो कर हठयोग-सत्र में परिणत होता था। इन सुप्रिय गतिविधियों के अतिरिक्त पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने इन तीन दिनों की अवधि में शृंखलाबद्ध प्रवचन दिये। (ये चार प्रवचन योग-शिक्षकों के उम्मीदवारों की उपस्थिति में 'योग-शिक्षक तालीम कोर्स' के अन्तर्गत थे।) सब प्रतिभागियों ने पूज्य श्री स्वामी जी महाराज के आभार मान कर इच्छा व्यक्त की कि पुनः योग-ज्ञान-दान हेतु वे शीघ्र ही पधारें।

दिनांक ३० नवम्बर को प्रभात में शाखा-समिति के सदस्यों, भक्तों तथा योग-साथियों के संग में हांग कांग वेट्लैन्डपार्क की (न्यू टेरिटोरीज़ में टिन शुई वाई में स्थित विश्व-श्रेणी की पर्यावरण यात्रा-सुविधा) तथा फुंग यींग सीन कून (न्यू टेरीटरीज़ में, फॅनलिंग-स्थित एक सुप्रसिद्ध ताओ मन्दिर) की, २३ प्रतिभागियों सहित मुलाकात ली।

दिनांक ३० नवम्बर (७-८:३० रात्रि में) पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने ४५ प्रतिभागियों की उपस्थिति में कॅसल पीक रोड योग केन्द्र में 'योग तथा योग-शिक्षण हेतु प्रायोगिक मार्गदर्शिका' विषयक प्रवचन भी दिया। स्वामी जी महाराज दिनांक ३ दिसम्बर, २००९ को मुख्यालय में पहुँचे। * * *

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अहमदाबाद, उस्मानपुरा (गुजरात): नवम्बर २००९ की माहावधि में शाखा ने निज योगासन-वर्गों का सातत्य रखा।

अम्बाला (हरियाणा): शाखा द्वारा दैनिक सत्संग, दिनांक ८ नवम्बर को वीडिओ-सत्संग तथा महिलाओं के लिए दैनिक योगासन-वर्ग सम्पन्न किये गये। दो होमियोपैथिक औषधालयों द्वारा सेवा चलती रही।

बड़कुँआल (उड़ीसा): शाखा ने प्रभात में दैनिक द्विवार पूजाएँ, स्तोत्र-पाठ, भजन-कीर्तन एवं अपराह्न में श्रीमद् भागवतम् पर प्रवचन परिचालित किये। प्रति गुरुवार और शिवानन्द-दिन को पादुका-पूजा की गयी। शाखा द्वारा भक्तों के निवास-स्थानों पर पादुका-पूजा सहित दो चल-सत्संग सम्पन्न हुए।

बरगढ़ (उड़ीसा): शाखा की नियमित गतिविधियाँह्वह्व दैनिक रूप से द्विवार पूजाएँ, दैनिक २ घण्टों का स्वाध्याय, ध्यान आदि सहित सान्ध्य-सत्र, साप्ताहिक सत्संग प्रति शनिवार को, प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा तथा प्रति रविवार को श्रीमद् भगवद् गीता पारायण चक्र। होमियोपैथिक औषधालय प्रति माह लगभग २०० मरीजों के इलाज करता है।

बल्लारि (कर्नाटक): शाखा ने दैनिक पूजा और प्रति रविवार को पादुका-पूजा और सत्संग परिचालित किये।

भावनगर (गुजरात): नियमित गतिविधियाँह्वह्वप्रति गुरुवार, शनिवार, रविवार को सत्संग; शिवानन्द-दिन, चिदानन्द- दिन को पादुका-पूजा; हर माह की पुण्यतिथिह्वदिनांक २८ को संकीर्तन; प्रति माह परिवार के निवास-स्थानों पर मृतात्माओं की शान्ति के लिए प्रार्थनाएँ (हर माह लगभग ५० बार); दैनिक योगासन-वर्ग; दैनिक होमियोपैथिक औषधालय; दो केन्द्रों पर एक्युप्रेशर उपचार, कुष्ठरोगियों की दो संस्थाओं में वास करने वाले ९५ परिवारों को कोरे राशन का वितरण; कुष्ठरोगियों के अस्पताल में भोज्य पदार्थों का वितरण तथा मरीजों को मलपात्रों, जल-शैयाओं, वॉकरों का प्रदान। विशेष गतिविधियाँह्वह्व(१) प्रथम पुण्यतिथि : २१ स्कूलों के कुल मिला कर १२६ प्रतिभागियों की प्रार्थना-सभा। उन्हें ज्ञान-प्रसाद का वितरण। कुष्ठरोगियों की संस्थाओं के ९५ परिवारों को मिठाइयाँ और कोरे राशन का प्रदान। (२) तीन दिवसीय श्रीसूक्त विषयक प्रवचन। (३) महारास पूर्णिमा : श्री सत्यनारायण कथा। (४) दीपावली : कुष्ठरोगियों की संस्था तथा अस्पताल में मिठाइयों का वितरण। (५) नूतन वर्ष : शिवानन्द आश्रम में गुजरात के नूतन वार्षिक दिन को स्नेह-मिलन। (६) 'आध्यात्मिक आश्रम की आवश्यकता' विषयक आध्यात्मिक प्रवचन। (७) दिनांक ८ नवम्बर को ११ कुंडी गायत्री-यज्ञ। (८) दिनांक २८-२९-३० नवम्बर को भगवद् गीता पर प्रवचन। (९) कुष्ठरोग के २३ मरीजों को सोमनाथ तथा अन्य धार्मिक स्थलों की यात्रा। (१०) ४५० विद्वानों तथा सुशिक्षितों की उपस्थिति में ४ एन. जी. संस्थाओं को उनकी उल्लेखनीय सेवाओं हेतु एक विशेष जाहिर उत्सव।

भिलाई (छत्तीसगढ़): शाखा ने दिनांक ४ अक्तूबर और ८ नवम्बर को पादुका-पूजा सहित मासिक सत्संग; प्रति मंगलवार, शुक्रवार और एकादशी को श्री हनुमान चालीसा, श्री ललिता सहस्रनाम, श्री विष्णु सहस्रनाम और श्रीमद् भगवद् गीता के पाठ सम्पन्न किये।

भोंगीर (आन्ध्र प्रदेश): शाखा के दैनिक सान्ध्य-सत्संग में श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र-पारायण समाविष्ट थे।

ब्रह्मपुर, चिदानन्द विहार (उड़ीसा): नियमित गति-विधियाँह्वह्वसाप्ताहिक सत्संग, चल-सत्संग, प्रति गुरुवार को, प्रति माह के दिनांक ८ और २४ को पादुका-पूजा, एकादशी की उभय तिथियों को गीता-पारायण, संक्रान्ति-दिन को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण, प्रति माह के तृतीय रविवार को साधना-दिन। विशेष गतिविधियाँह्वह्व(१) कार्तिकी पूर्णिमा : महामन्त्र का अखण्ड कीर्तन १२ घण्टों का और पादुका-पूजा। (२) श्रीमद् भगवद् गीता जयन्ती : प्रत्येक श्लोक-पठन के साथ आहुति युक्त यज्ञ, प्रसाद-सेवन।

ब्रह्मपुर, लांजीपल्ली (उड़ीसा): शाखा ने प्रति शनिवार और संक्रान्ति दिन को सत्संग किये तथा मासिक साधना-दिन और प्रति माह के अन्तिम रविवार को नारायण-सेवा सम्पन्न की।

छत्रपुर (उड़ीसा): शाखा ने दैनिक सत्संग के अतिरिक्त साप्ताहिक सत्संग, दो चल-सत्संग, दिनांक ८ तथा २४ अक्तूबर को पादुका-पूजा तथा संक्रान्ति-दिन को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण किये। शाखा ने एक माहभर श्री रामचरित मानस का पारायण किया जिसके समापन में आदरणीय श्री स्वामी अर्पणानन्द जी ने भक्तों को सम्बोधन किया। दिनांक २९ अक्तूबर को दो संन्यासियों की शाखा की मुलाकात निमित्त विशेष सत्संग आयोजित हुए।

चेन्नै, अन्ना नगर (तमिल नाडु): दिनांक २९ नवम्बर को शाखा का मासिक सत्संग सम्पन्न हुआ।

फरीदपुर (उत्तर प्रदेश): शाखा द्वारा दैनिक पूजा और समूह प्रार्थना, वर्षभर एक माह पर्यन्त श्री रामचरित मानस का पारायण जिसकी पूर्णाहुति प्रति माह पौर्णिमा को हवन द्वारा होती है, स्वाध्याय तथा ध्यान के साथ साप्ताहिक सत्संग और प्रति माह द्वितीय बुधवार को रामायण पर प्रवचन पूर्ण किये जाते हैं।

घाटपदमुर, जगदालपुर (छत्तीसगढ़): शाखा ने प्रभात में दैनिक पूजा, प्रार्थना-ध्यान, स्तोत्र-पाठ तथा योगासन और सन्ध्या को अर्ध घण्टे के संकीर्तन पश्चात् सत्संग परिचालित किये। प्रति गुरुवार पादुका-पूजा; प्रति रविवार को श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का पारायण; प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण और दीपावली को विशेष पूजा, संकीर्तन, जप, दीपशोभा आदि सम्पन्न किये।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़): दैनिक गतिविधियाँ ह्लत्रिवार पूजाएँ; प्रातः ध्यान-प्रार्थना; योगासन और सान्ध्य-सत्संग। प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा, प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण और अन्य दिनों को सम्बन्धित देव-देवी के स्तोत्र-पाठ। दीपावली को दीपोंयुक्त आश्रम का शृंगार और विशेष पूजा आदि सम्पन्न किये गये।

जयपुर, मालवीय नगर (राजस्थान): दैनिक रूप से योगासन और एक घण्टे के ध्यान सत्र के अतिरिक्त, प्रभात में एक घण्टे का ध्यान और सायंकाल में स्वाध्याय के आधिक्य में शाखा ने प्रति रविवार को सत्संग और हवन, मातृ-सत्संग, नारायण-सेवा और मरीजों को होमियोपैथिक औषधालय द्वारा सतत निःशुल्क उपचार किये।

जयपुर (उड़ीसा): द्विवार दैनिक पूजाएँ, साप्ताहिक सत्संग, साप्ताहिक चल-सत्संग के आधिक्य में शाखा ने हवन, स्वाध्याय, पूजा और प्रसाद-सेवन के साथ शिवानन्द-दिन; ५० भक्तों की प्रतिभागिता के मध्य, परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज के जीवन तथा उनकी शिक्षाओं पर प्रवचन, स्वाध्याय, उनकी पुस्तक में से चयनित भाग का पठन, पूजा, आरती सहित, परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि के कार्यक्रम सम्पन्न किये गये।

काकिनाडा (आन्ध्र प्रदेश): शाखा के रविवारीय सत्संगों में द्वितीय रविवार को कुण्डलिनी और ध्यान पर एक प्रवचन और चतुर्थ रविवार को दो प्रवचन आयोजित हुए।

कंटाबाँझी (उड़ीसा): शाखा ने प्रति रविवार भगवद् गीता के स्वाध्याय सहित सत्संग सम्पन्न किये। श्रीमद् भगवद् गीता जयन्ती के विशेष कार्यक्रम में पूजा, भगवद् गीता पारायण, आरती, होम, प्रसाद-सेवन तथा सन्ध्या में पूजा, कीर्तन, आरती, प्रसाद-सेवन सम्पन्न हुए।

खातिगुडा (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँ ह्लह्लसाप्ताहिक सत्संग; श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र-पारायण सहित एकादशी-सत्संग, १२ घण्टों के महामन्त्र के अखण्ड कीर्तन और नारायण-सेवा सहित मासिक साधना-दिन। सितम्बर माह की विशेष गतिविधियाँ ह्लह्ल(१) शिवानन्द जयन्ती : प्रातः प्रार्थना-ध्यान, नगर-कीर्तन, भण्डारा, विशेष रात्रि-सत्संग। (२) नवरात्रि पूजा : दैनिक पूजा-अर्चना, श्री दुर्गा सप्तशती और 'God As Mother' इन पुस्तकों के स्वाध्याय सहित रात्रि-सत्संग तथा विजयादशी को उत्सव।

खुर्जा (उत्तर प्रदेश): शाखा के प्रति रविवार के सत्संगों में स्वाध्याय और संकीर्तन समाविष्ट थे; हर एकादशी को मातृ-सत्संग; प्रति रविवार को प्रभात में ध्यान, प्रभात में भाइयों हेतु और सायंकाल में महिलाओं के लिए योगासन-वर्ग; होमियोपैथिक औषधालय ने दैनिक रूप से मरीजों के उपचार किये।

कौकोंडा (छत्तीसगढ़): शाखा द्वारा दैनिक संकीर्तन, परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की प्रथम पुण्यतिथि

पर पादुका-पूजा और शाखा के पूर्व अध्यक्ष जी की प्रथम पुण्यतिथि पर विशेष प्रार्थना-सभा और भण्डारा; तथा नवरात्रि के दौरान दैनिक पूजा-अर्चना और एक भण्डारा आदि आयोजित हुए।

मदुरै (तमिल नाडु): शिवानन्द स्टडी सर्कल, तिरुनगर ३० वर्षों से अधिक समय से रविवारीय अध्ययन वर्ग परिचालित करता है। शाखा के, ३१ वें वार्षिक दिन को दिनांक १४ नवम्बर से दिनांक १९ नवम्बर पर्यन्त ९ सत्रों में, विविध स्थानों पर ९ विद्वानों के प्रवचन आयोजित किये गये।

नन्दिनी नगर (छत्तीसगढ़): शाखा के दैनिक प्रार्थना-स्तोत्र-पाठ के २ घण्टे के ब्राह्ममुहूर्तीय सत्र तथा सान्ध्य-सत्संग के आधिक्य में, शाखा ने साप्ताहिक चल-सत्संग, सुन्दरकाण्ड-पारायणयुक्त शनिवार के मातृ-सत्संग, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र और श्रीमद् भगवद् गीता पारायणयुक्त एकादशी के मातृ-सत्संग और प्रति माह दिनांक ३ को ६ घण्टों का महामन्त्र का अखण्ड कीर्तन भी सम्पन्न किये। दिनांक १४ और १९ अक्तूबर को आयोजित हवन विशेष गतिविधियाँ थी।

फुलबानी (उड़ीसा): दैनिक और नियमित गतिविधियाँ ह्लह्लदैनिक द्विवार पूजाएँ, साप्ताहिक सत्संग और चल-सत्संग, शिवानन्द-दिन तथा चिदानन्द-दिन को पादुका-पूजा। विशेष गतिविधियाँह्लह्ल(१) आदरणीय बाबा श्री किशोरी चरणदास जी द्वारा श्रीमद् भागवतम् पर प्रवचन। (२) कार्तिक महीने में शुक्ल पक्ष में १५ दिनों पर्यन्त प्रो. हुदानन्द रे जी द्वारा भी भागवत-प्रवचन।

रायपुर (छत्तीसगढ़) : शाखा द्वारा साप्ताहिक सत्संग तथा प्रति एकादशी को पूजा श्री विष्णु सहस्रनाम पारायण आदि परिचालित हुए। श्रीमद् भगवद् गीता जयन्ती के कार्यक्रम में, तीन सत्रों में, ११ घण्टों से भी अधिक समयावधि में, ब्राह्ममुहूर्तीय ध्यान, गीता-पारायण, सत्संग, आदरणीय श्री स्वामी रामयोगी जी का प्रवचन एवं एकादशी-कार्यक्रम का सान्ध्य-सत्र आदि समाविष्ट थे।

राउरकेला, शिवानन्द आश्रम (उड़ीसा): दैनिक और नियमित गतिविधियाँह्लह्लब्राह्ममुहूर्तीय ध्यान-प्रार्थना और योगासन-वर्ग; प्रति गुरुवार को प्रभात में पादुका-पूजा तथा साप्ताहिक सान्ध्य-सत्संग; साप्ताहिक चल-सत्संग; शिवानन्द-दिन को पादुका-पूजा; चिदानन्द-दिन को प्रभात में पादुका-पूजा और विशेष सान्ध्य-सत्संग तथा होमियोपैथिक औषधालय। विशेष गतिविधियाँह्लह्ल(१) श्रीमद् भगवद् गीता जयन्ती : पादुका-पूजा, गीता के प्रति श्लोक आहुति युक्त हवन, प्रसाद-सेवन और कल्पतरु आश्रम-निवासियों को अन्नदान। (२) स्थापना-दिन : दसवें प्रतिष्ठा-दिन के वार्षिक समारोह में प्रभातफेरी, पादुका-पूजा, श्री विष्णु सहस्रनाम तथा गीता-पारायण, लिखित मन्त्र-जप-सत्र, प्रसाद-सेवन, नारायण-सेवा तथा सान्ध्य-सत्संग। (३) परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि : पादुका-पूजा, गीता-पारायण तथा सान्ध्य-सत्संग।

राउरकेला, स्टील टाउनशिप (उड़ीसा): शाखा ने साप्ताहिक चल-सत्संग और गीता-जयन्ती को विशेष कार्यक्रम सम्पन्न किये।

सालेपुर (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्लह्लद्विवार पूजाएँ, दैनिक ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान सभा; १ घण्टा कीर्तन, १ घण्टा जप-स्तोत्रपाठ; दैनिक सान्ध्यह्लह्ल१ घण्टे का अध्ययन-कक्ष, स्तोत्रपाठ, ध्यान, स्वाध्याय; साप्ताहिक सत्संग; प्रति सोमवार को श्री शिवसहस्रनामावली का पाठ; दिनांक ३ अक्तूबर को श्री सुन्दरकाण्ड का और दिनांक ४ को गीता का पारायण; शिवानन्द-दिन को पादुका-पूजा, 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का १ घण्टा जप, 'साधना' पुस्तक का स्वाध्याय तथा सान्ध्य-सत्संग; मासिक साधना-दिन तथा स्वामी शिवानन्द चैरिटेबल अस्पताल में, अक्तूबर माह में ३३० मरीजों के इलाज। विशेष गतिविधियाँह्लह्ल(१) दिनांक २५ अक्तूबर को १२ घण्टों का महामन्त्र का अखण्ड जप। (२) प्रति सोमवार को, ५०८ प्रतिभागियों को एक स्थानिक कॉलेज में योगासन तालीम।

साउथ बलण्डा (उड़ीसा): शाखा ने द्विवार पूजाएँ, साप्ताहिक सत्संग, शिवानन्द-दिन चिदानन्द-दिन को विशेष सत्संग, पादुका-पूजा, संक्रान्ति-दिन को ३ घण्टों का अखण्ड महामृत्युंजय-मन्त्र-जप और ३ घण्टों का महामन्त्र का अखण्ड कीर्तन। श्रीमद् भागवत कथामृत का सप्ताह और २ नवम्बर को उसका समापन-कार्यक्रम भी सम्पन्न किये गये।

सुनाबेडा (उड़ीसा): शाखा ने स्वाध्याय सहित साप्ताहिक द्विवार सत्संग परिचालित करने के अतिरिक्त कार्तिक पूर्णिमा को पादुका-पूजा, महामन्त्र का १२ घण्टों का अखण्ड कीर्तन, नगर-संकीर्तन और प्रसाद-सेवन आदि सम्पन्न किये। श्रीमद् भगवद् गीता जयन्ती के प्रमुख कार्यक्रमों में पादुका-पूजा, हवन और गीता-पारायण समाविष्ट थे। दिनांक ४ अक्तूबर को अनेक भक्तों का मन्त्र-दीक्षा दिन होने से शाखा ने प्रार्थना-ध्यान की ब्राह्ममुहूर्तीय सभा एवं हवन आयोजित किये।

सुरेन्द्र नगर (गुजरात): शाखा ने प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण और प्रति रविवार को आध्यात्मिक प्रवचन सम्पन्न किये। परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने 'At the Feet of the Master' का गुजराती अनुवाद तथा 'What is Divine Life' और 'Prathana and Stotras' जो कि शाखा द्वारा प्रकाशित हुए थे, उनका विमोचन किया। आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी ने प्रभात में एक और सायंकाल में दूसरे स्थान पर इस प्रकार योगासन-वर्ग तथा १९ ग्राम/शहरों में निज जाहिर प्रवचन/सत्संग सम्पन्न किये। उनकी यात्रावधि में ६ नूतन शाखाएँ और सत्संग-केन्द्र आरम्भित किये गये। शाखा ने श्रीमद् भागवतम्, श्री रामचरित मानस और श्रीमद् भगवद् गीता के ३४६ सेट वितरित किये।

बिक्रमपुर (उड़ीसा): पावन कार्तिक माहावधि में शाखा ने श्रीमद् भागवतम् का संस्कृत मूल पारायण प्रभात में और उड़िया भाषा में प्रवचन सायंकाल में, ५ बार पूजा-आरती, शृंगार, भोग आदि आयोजित किये। समापन के दिन कार्यक्रमों में गीता-पारायण और श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पारायण, हवन तथा प्रसाद-सेवन समाविष्ट थे।

विशेष गतिविधि

राजकोट में आध्यात्मिक परिषद्

दिव्य जीवन संघ की राजकोट तथा वीरनगर शाखाओं ने तथा शिवानन्द मिशन, वीरनगर ने संयुक्त रूप से दिनांक ३०, ३१ अक्तूबर और दिनांक १ नवम्बर को राजकोट में एक आध्यात्मिक परिषद् आयोजित की। गुजरात की दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के ५३० प्रतिनिधि और उड़ीसा तथा झारखण्ड के २० प्रतिनिधि उसमें सम्मिलित हुए। आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी ने राजकोट में एक सप्ताह पूर्व पहुँच कर योगासन-वर्ग परिचालित किये।

परम पावन श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, आदरणीय श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी, ३ अन्य स्वामी जी, प्रोफेसर रणदेव जी और अन्य दो सुप्रसिद्ध विद्वानों ने अमूल्य आध्यात्मिक प्रवचन तथा मार्गदर्शन दिये। प्रश्नोत्तर-सत्र में परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने प्रश्नकर्ताओं की शंकाओं को निर्मूल करते हुए साधकों को मार्गदर्शन दिया। परिषद् एक महान् सफलता थी।

SPECIAL ANNOUNCEMENT

With effect from 28.09.2009, Vijaya Dasami Day, the Rates of Audio CDs, Audio CDs (Twin), Video CDs and DVDs are revised as under.

1. Audio CDs	Rs. 50/- each
2. Audio CDs (Twin)	Rs. 90/- each
3. Video CDs	Rs. 60/- each
4. Video CDs (Twin)	Rs. 110/- each
5. DVDs	Rs. 60/- each

—The Divine Life Society

हिन्दी बुकलिस्ट

अंगरेजी पत्रिका का अन्तिम पृष्ठ

फिलर

साधक और गुरुह्वदोनों को साथ-साथ पिता और पुत्र के समान प्रेम से रहना चाहिए। उनका प्रेम घनिष्ट और पवित्र होना चाहिए। गुरु प्रेम और स्नेह के साथ साधक का परिपालन करे तथा साधक आदर, भक्ति और श्रद्धा के साथ गुरु के साथ रह कर साधना करे। साधक की प्रतिभा इतनी प्रखर और ग्राहक होनी चाहिए कि गुरु का एक बार का उपदेश उसके रोम-रोम में रम जाना चाहिए। इसके लिए, गुरु के आदेश के लिए, सदा प्रतीक्षा करनी चाहिए। गुरु के आदेशों को पाने के लिए सच्चे दिल से उत्कण्ठित रहना चाहिए। यदि ऐसा हो गया, तो साधक अमित लाभ का भागी हो सकता है। अन्यथा अविरत साधना करते रहने पर भी ढाक के तीन पात रहेंगे, साधक के आसुरिक भाव जैसे-के-तैसे ही रहेंगे, वह तिल-भर भी आगे नहीं बढ़ सकेगा।

ह्वह्वस्वामी शिवानन्द

ब्रह्मचर्य–साधना : विवाह करें अथवा न करें १ अगस्त

ह्वह्व परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ह्वह्व

क्या ब्रह्मचर्य सम्भव है?

यद्यपि संसार में विविध प्रकार के प्रलोभन तथा चित्त–विक्षेप हैं, तथापि यहाँ रहते हुए भी ब्रह्मचर्य का अभ्यास करना सर्वथा सम्भव है। प्राचीन काल में अनेकों ने इसमें सफलता प्राप्त की थी और आज भी अनेक लोग हैं। अनुशासित जीवन, सात्त्विक मिताहार, धर्मग्रन्थों का स्वाध्याय, सत्संग, जप, ध्यान, प्राणायाम, दैनिक अन्तरावलोकन तथा परिपृच्छा, आत्म–विश्लेषण तथा आत्म–सुधार, सदाचार, यम, नियम तथा गीता के सतरहवें अध्याय के उपदेशानुसार शारीरिक, वाचिक तथा मानसिक तपों का अभ्यासह्वह्वये सभी इस लक्ष्य की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। लोग अनियमित, अनैतिक, अमर्याद, अधार्मिक तथा अनुशासनहीन जीवन व्यतीत करते हैं। जिस प्रकार हाथी अपने ही शिर पर धूल डालता है, वेसे ही लोग अपनी मूर्खतावश अपने ही ऊपर कठिनाइयों और संकटों को लाते हैं।

ब्रह्मचर्य का अभ्यास करने वाले व्यक्ति प्रायः यह शिकायत करते हैं कि ब्रह्मचर्य के कारण उन्हें मानसिक थकावट होती है। यह केवल मन का धोखा है। कभी–कभी आपको मिथ्या भूख लगती है। ऐसी अवस्था में जब आप वास्तव में भोजन करने के लिए बैठते हैं, तो आपको वास्तविक अच्छी भूख नहीं होती है और आप कुछ खाना नहीं खा पाते। इसी भाँति, मिथ्या मानसिक थकान है। यदि आप ब्रह्मचर्य पालन करेंगे, तो आपको अपरिमित मानसिक शक्ति प्राप्त होगी। आप इसे सदा अनुभव नहीं कर सकेंगे। जिस प्रकार एक पहलवान जो साधारणतया अपने को एक प्रसामान्य व्यक्ति अनुभव करता है और अखाड़े में अपने शारीरिक बल को प्रकट करता है, वैसे ही आप भी अवसर उपस्थित होने पर अपनी मानसिक शक्ति को प्रकट करेंगे।

इन्द्रिय–निग्रह हानिकारक नहीं है। यह शक्ति को सुरक्षित रखता तथा अपरिमित मनोबल तथा शान्ति प्रदान करता है। अति–विषय–सुख–निरति नैतिक तथा आध्यात्मिक दिवालियेपन, असामयिक मृत्यु तथा मनःशक्ति, प्रतिभा तथा ग्रहण–शक्ति की क्षति का कारण बनती है।

ब्रह्मचर्य के अभ्यास के परिणाम–स्वरूप कोई संकट अथवा भीषण रोग अथवा विविध प्रकार की मनोग्रन्थियों जैसे कोई अनिष्ट फल नहीं होते, जिनके लिए पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक भूल से उसे उत्तरदायी ठहराते हैं। उन्हें इस विषय का व्यावहारिक ज्ञान नहीं है। उनकी यह निराधार तथा गलत धारणा है कि अतृप्त काम–शक्ति प्रच्छन्न रूप से स्पर्श–भीति आदि जैसी विविध प्रकार की मनोग्रन्थियों का आकार धारण कर लेती है। इस मनोग्रन्थि के कुछ अन्य कारण हैं। यह मनोग्रन्थि विविध कारणों से उत्पन्न अत्यधिक ईर्ष्या, घृणा, क्रोध, चिन्ता तथा उदासी के फल–स्वरूप होने वाली मन की विकृत अवस्था है।

इसके विपरीत, थोड़ा-सा भी आत्म-संयम अथवा ब्रह्मचर्य का थोड़ा-सा भी अभ्यास एक आदर्श उद्दीपक बलवर्धक औषधि है। यह मनोबल तथा मानसिक शान्ति प्रदान करता, मन तथा स्नायुओं को अनुप्राणित करता, शारीरिक तथा मानसिक शक्ति के संरक्षण में सहायता करता, स्मृति, संकल्प-शक्ति तथा मेधा-शक्ति की वृद्धि करता, अत्यधिक बल, ओज तथा जीवन-शक्ति प्रदान करता, शरीर-गठन का नवीकरण करता, कोशाणुओं तथा ऊतकों का पुनर्निर्माण करता, पाचन-शक्ति को सबल बनाता तथा दैनिक जीवन-संग्राम में कठिनाइयों का सामना करने के लिए शक्ति प्रदान करता है। धैर्य तथा साहस के विशेष सद्गुणों का ब्रह्मचर्य के सम्पोषण से घनिष्ठ सम्बन्ध है। एक अखण्ड ब्रह्मचारी संसार को हिला सकता, प्रभु यीशु की भाँति सागर की लहरों को रोक सकता, पर्वतों को ध्वस्त कर सकता तथा ज्ञानदेव की भाँति प्रकृति तथा पंचमहाभूतों पर शासन कर सकता है। त्रैलोक्य में उसके लिए कोई भी वस्तु अप्राप्य नहीं है। सारी सिद्धियाँ तथा ऋद्धियाँ उसके चरणों में लोटती हैं।

भोगवादियों का मूर्खतापूर्ण तर्क

कुछ अज्ञानी कहते हैं॥ ''काम को रोकना ठीक नहीं है। हमें प्रकृति के विरुद्ध नहीं जाना चाहिए। भगवान् ने सुन्दरी युवतियों का निर्माण क्यों किया है? उनके इस सर्जन में कुछ-न-कुछ अभिप्राय तो होना ही चाहिए। हमें उनका उपभोग करना चाहिए तथा यथासम्भव अधिक-से-अधिक सन्तान उत्पन्न करनी चाहिए। यदि सभी व्यक्ति संन्यासी बन जायें तथा जंगलों में चले जायें, तो इस संसार का क्या होगा? यह समाप्त हो जायेगा। यदि हम काम को रोकेंगे, तो हमें रोग लग जायेंगे। हमारे प्रचुर सन्तान होनी चाहिए। यदि हमारे प्रचुर बच्चे होते हैं, तो घर में आनन्द छाया रहता है। विवाहित जीवन के सुख का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है। यही जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य है। मैं वैराग्य, त्याग, संन्यास तथा निवृत्ति को पसन्द नहीं करता।'' यही उनका भोंडा दर्शन है। वे लोग चार्वाक तथा विरोचन के साक्षात् वंशज हैं। वे भोगवादी विचारधारा के आजीवन सदस्य हैं। अतिभोजिता ही उनके जीवन का लक्ष्य है। उनके अनुयायियों की संख्या बहुत बड़ी है। वे शैतान के मित्र हैं। उनका दर्शन कितना प्रशंसनीय है!

जब वे अपनी सम्पत्ति, पत्नी तथा सन्तान खो बैठते हैं, जब वे किसी असाध्य रोग से पीड़ित होते हैं, तब कहते हैं॥ ''भगवान्! मुझे इस भयंकर रोग से मुक्त कीजिए। मेरे पापों के लिए मुझे क्षमा कर दीजिए। मैं महापापी हूँ।'' (अनूदित)

ब्रह्मचर्य–साधना : विवाह करें अथवा न करें २ सितम्बर

ह्ल परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ह्ल

किसी भी मूल्य पर काम पर नियन्त्रण करना ही चाहिए। काम को रोकने से एक भी रोग नहीं होता। इसके विपरीत इससे असीम शक्ति, सुख तथा शान्ति प्राप्त होती है। काम को नियन्त्रित करने के कुछ प्रभावकारी साधन भी हैं। व्यक्ति को प्रकृति के विरुद्ध जा कर प्रकृति से परे आत्मा को प्राप्त करना चाहिए। जिस प्रकार मछली नदी में धारा के प्रतिकूल उपरिनद में तैरती है, उसी प्रकार आपको अनिष्टकारी शक्ति–रूपी संसार–प्रवाह के विपरीत चलना होगा। तभी आपको आत्म–साक्षात्कार की प्राप्ति हो सकती है। काम एक अनिष्टकारी शक्ति है और यदि आप अक्षय आत्मानन्द को प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको इस पर नियन्त्रण प्राप्त करना ही होगा। यौन–सुख कोई सुख नहीं है। यह मानसिक भ्रान्ति है। संकट, पीड़ा, भय, आयास तथा जुगुप्सा इसके साथ लगे रहते हैं। यदि आपको योग अथवा आत्म–विज्ञान की जानकारी हो जाये, तो आप इस भयानक रोग काम को सहज ही नियन्त्रित कर सकते हैं। भगवान् चाहते हैं कि आप आत्मानन्द का उपभोग करें। इसकी प्राप्ति इस संसार के इन सभी सुखों को त्यागने से ही हो सकती है। ये सुन्दरी स्त्रियाँ तथा सम्पत्ति आपको मोहित करने तथा अपने जाल में फँसाने के लिए माया के उपकरण हैं। यदि आप अपने क्षुद्र विचारों तथा दूषित कामनाओं के साथ सदा सांसारिक व्यक्ति बने रहना चाहते हैं, तो आप निश्चय ही ऐसा कर सकते हैं। आपको पूर्ण स्वतन्त्रता है। आप तीन सौ पैंसठ पत्नियों से विवाह कर सकते हैं और जितने हो सकें, उतने बच्चे उत्पन्न कर सकते हैं। आपको कोई भी रोक नहीं सकता है। परन्तु आपको शीघ्र ही यह ज्ञात हो जायेगा कि यह संसार आपको आपके मनोनुकूल सन्तोष प्रदान नहीं कर सकता है; क्योंकि सभी पदार्थ दिक्काल तथा कारण पर आश्रित हैं। यहाँ मृत्यु, रोग, जरा, परेशानी, चिन्ता तथा आकुलता, भय, हानि, निराशा, असफलता, दुर्व्यवहार, शीत, ताप, सर्प–दंश, बिच्छू–डंक, भूकम्प तथा दुर्घटनाएँ हैं। आप एक क्षण के लिए भी किंचित् मानसिक शान्ति प्राप्त नहीं कर सकते; क्योंकि आपका मन काम तथा मल से पूर्ण है। अभी आपकी समझ दूषित तथा आपकी बुद्धि विकृत हो गयी है; अतः आप संसार के प्रातिभासिक स्वरूप तथा आत्मा के चिरन्तन सुख को समझ नहीं पा रहे हैं।

काम को प्रभावशाली ढंग से नियन्त्रित किया जा सकता है। इसके लिए अकाट्य विधियाँ हैं। काम को नियन्त्रित करने पर आप अपने अन्तर से, आत्मा से सच्चे सुख का उपभोग करेंगे। सभी व्यक्ति संन्यासी नहीं बन सकते। उनके बहुत से सम्बन्ध तथा आसक्तियाँ हैं। वे कामुक हैं, अतः वे संसार का त्याग नहीं कर सकते हैं। वे अपनी पत्नियों, बच्चोंह्लथा सम्पत्ति से आबद्ध हैं। आपका तर्क–वाक्य अनुचित

है। यह असम्भव है। यह अशक्य है। क्या आपने विश्व-इतिहास के इतिवृत्त में कभी ऐसा सुना है कि सभी व्यक्तियों के संन्यासी हो जाने के कारण यह विश्व जन-शून्य हो गया है? फिर आप ऐसे असंगत तर्क-वाक्य क्यों प्रस्तुत करते हैं? यह आपके मूर्खतापूर्व तर्क तथा उस शैतानी दर्शन को समर्थन करने के लिए आपके मन की एक विलक्षण चाल है, जिसका काम-वासना तथा यौन-तुष्टि एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। भविष्य में इस तरह की बातें न कीजिए। इससे आपकी मूर्खता तथा वासनामयी प्रकृति प्रकट होती है। इस संसार के विषय में आप चिन्ता न कीजिए। अपने काम से काम रखिए। ईश्वर सर्वशक्तिमान् है। यदि सभी लोग जंगल में चले जायें और यह संसार जन-शून्य हो जाये, तब भी भगवान् पल-भर में अपने संकल्प मात्र से करोड़ों लोगों की पल मात्र में सृष्टि कर देगा। यह देखना आपका कार्य नहीं है। अपनी काम-वासना के उन्मूलन के लिए उपाय खोज निकालिए।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में विवाह एक अपरिहार्य तत्त्व नहीं माना जा सकता है। वास्तव में एक सच्चे साधक को निश्चय ही अपने को विवाहित जीवन की बेड़ियों से दूर, बहुत दूर रखना चाहिए। विवाह उसके लिए अभिशाप है। तथापि उस कामुक प्रकृति वाले व्यक्ति के लिए जिसके लिए विषय-वासना को पराभूत करना अत्यन्त दुष्कर है, यह उसकी नैतिक असावधानी के लिए एक प्रकार का बाड़ा अथवा सुरक्षा प्रदान करने वाली तिजोरी है। अतः विवाह उन लोगों के लिए विहित हैॱॱऔर यह अधिसंख्यक मानव-जाति पर लागू होता हैॱॱजो अभी पूर्ण आत्म-निग्रह के जीवन के लिए तैयार नहीं हैं और इस भाँति उन्हें विवाह को एक संस्कार मानना चाहिए, किन्तु निश्चय ही इसे विषयासक्ति का अनुज्ञा-पत्र नहीं समझना चाहिए।

इस संसार में उत्पन्न हुए प्रत्येक व्यक्ति को विवाह करना अनिवार्यतः आवश्यक नहीं है। विवाह इस लोक में मनुष्य के जीवन को नियमित बनाने के लिए है। यदि समाज में विवाह की प्रथा न होती, तो जीवन अनियमित तथा पाशविक हो गया होता। किन्तु जहाँ हृदय में काम-वासना नहीं है, जहाँ भगवान् के लिए प्रबल अभीप्सा है, जहाँ आध्यात्मिक खोज की आकांक्षा है, वहाँ विवाह अनिवार्य नहीं है। ऐसा व्यक्ति नैष्ठिक ब्रह्मचारी का जीवन यापन कर सकता है।

माता-पिता को अपने पुत्रों को विवाह करने के लिए विवश नहीं करना चाहिए। उन्हें अपने बच्चों के आध्यात्मिक संस्कारों को कुचलना नहीं चाहिए। अनेक युवक जिनमें आध्यात्मिक जागृति है, करुण शब्दों में मुझको लिखते हैंॱॱ''प्रिय स्वामी जी, मेरा हृदय उच्चतर आध्यात्मिक विषयों के लिए आतुर है। मुझे सांसारिक विषयों में कोई रुचि नहीं है। मेरा परिवेश अनुकूल नहीं है। मैं विवाह-जाल में उलझ गया हूँ। मेरे माता-पिता ने मेरी इच्छा के विपरीत मुझे विवाह करने को विवश किया। मुझे अपने वृद्ध माता-पिता को तुष्ट करना था। उन्होंने मुझे कई प्रकार से धमकी दी। अब मैं रोता हूँ। मैं अब क्या करूँ?'' कुमार बालकों, जिनको इस संसार अथवा इस जीवन का कुछ बोध नहीं, का आठ या दश वर्ष की आयु में विवाह कर दिया जाता है। हम बच्चों को बच्चे उत्पन्न

करते देखते हैं। शिशु माताएँ हैं। लगभग अठारह वर्ष के बालक के तीन बच्चे हैं। क्या ही भयानक स्थिति है ! बाल-विवाहों से वीर्य का अकाल नाश होता है। इससे शारीरिक तथा मानसिक अधःपतन होता है। कोई भी दीर्घायु नहीं होता। सभी अल्पजीवी हैं। बार-बार के प्रसव से स्त्रियों का स्वास्थ्य नष्ट होता है तथा अनेक रोग उत्पन्न होते हैं।

आपने पहनावे तथा भूषाचार-सम्बन्धी विषयों में पाश्चात्य जगत् की विविध आदतें अपनायी हैं। आप निकृष्ट अनुकरण करने वाले प्राणी बन गये हैं। पाश्चात्य जगत् के लोग जब तक परिवार का अच्छी तरह भरण-पोषण करने योग्य नहीं हो जाते, विवाह नहीं करते हैं। उनमें अधिक आत्म-निग्रह है। वे प्रथम जीवन में एक अच्छा पद प्राप्त करते हैं, धनोपार्जन करते हैं, कुछ बचत करते हैं और तभी विवाह के विषय में सोचते हैं। यदि उनके पास पर्याप्त धन नहीं होता, तो वे आजीवन कुँवारे ही रहते हैं। वे इस संसार में भिक्षुओं को उत्पन्न करना नहीं चाहते हैं जैसा कि आप करते हैं। जिसने इस संसार में मानव के दुःखों को समझ लिया है, वह स्त्री के गर्भ में एक बच्चा उत्पन्न करने का साहस कदापि नहीं करेगा। (अनूदित)

ब्रह्मचर्य-साधना : विवाह करें अथवा न करें ३ अक्तूबर

॥ परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ॥

पति तथा पत्नी के मध्य प्रेम का स्वरूप

पति तथा पत्नी के मध्य का प्रेम मुख्यतः शारीरिक, स्वार्थी तथा दम्भी होता है। यह स्थिर नहीं होता। यह क्षणभंगुर तथा परिवर्तनशील होता है। यह शारीरिक काम-वासना मात्र है। यह यौनोपराग है। इसमें निम्न संवेगों का पुट होता है। यह पाशविक प्रकृति का होता है। यह सीमित है। किन्तु दिव्य प्रेम असीम, शुद्ध, सर्वव्यापी तथा नित्य-स्थायी होता है। यहाँ विवाह-विच्छेद का प्रश्न नहीं उठता।

अधिसंख्यक पति तथा पत्नी के बीच में वास्तव में आन्तरिक मेल नहीं होता है। सावित्री तथा सत्यवान्, अत्रि तथा अनसूया इन दिनों बहुत ही विरले होते हैं। क्योंकि पति तथा पत्नी केवल स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों से बाह्यतः ही संयुक्त होते हैं; अतः उनमें मुस्कान तथा बाह्य प्रेम का कुछ दिखावा मात्र होता है। यह सब दिखावा मात्र है।

क्योंकि उनके विश्वास की गहनतम अनुभूतियों में वास्तविक एकता नहीं होती, अतः प्रत्येक घर में सदा ही किसी-न-किसी प्रकार का वैमनस्य तथा अनबन, वक्र चेहरे तथा तीक्ष्ण शब्द होते रहते हैं। यदि पति अपनी पत्नी को चलचित्र-भवन नहीं ले जाता, तब घर में झगड़ा चल पड़ता है। क्या आप इसे सच्चा प्रेम कह सकते हैं! यह स्वार्थपरक व्यापारिक कार्य है। काम-वासना के कारण लोग अपनी सत्यनिष्ठा, स्वतन्त्रता तथा गरिमा खो बैठे हैं। वे स्त्रियों के दास बन गये हैं। आप क्या ही दयनीय दृश्य देख रहे हैं! कुंजी पत्नी के पास है और दो रुपये के लिए भी पति को उसके सामने अपना हाथ पसारना पड़ता है। तथापि भ्रान्ति तथा कामोन्मादवश पति कहता है॥ ''मेरे एक प्रेमपात्र स्नेही पत्नी है। वह वास्तव में मीरा है। वह वस्तुतः पूजनीय है।''

स्वार्थपरक प्रेम में प्रेमी तथा प्रेयसी के मध्य सच्चा सुख नहीं हो सकता है। पति के मरणासन्न होने पर पत्नी अधिकोष-लेखा-पुस्तिका (बैंक पासबुक) ले कर चुपके से अपने मायके चली जाती है। पति की कुछ दिनों के लिए नौकरी छूट जाती है, तो पत्नी मुँह बनाती है, कठोर शब्द बोलती है तथा प्रेमपूर्वक उसकी उचित सेवा नहीं करती है। यह स्वार्थी प्रेम है। उनके हृदय-अन्तर्भाग में सच्चा स्नेह नहीं होता है। अतः घर में सदा लड़ाई-झगड़ा तथा अशान्ति रहती है। पति तथा पत्नी वास्तव में एक नहीं हुए हैं। वे नीरस तथा खिन्न जीवन को खींचते हुए येन-केन-प्रकारेण निभाते रहते हैं।

काम-वासना किसी तरह भी प्रेम नहीं है। यह पशु-प्रवृत्ति है। यह शारीरिक प्रेम है। यह पाशविक स्वरूप वाला है। यह स्थानान्तरित होता रहता है। यदि पत्नी किसी असाध्य रोग के कारण अपना सौन्दर्य खो बैठती है, तो पति उससे विवाह-विच्छेद

कर द्वितीय पत्नी से विवाह कर लेता है। इस संसार में यह परिस्थिति जारी रहती है।

पति अपनी पत्नी से पत्नी के लिए प्रेम नहीं करता, वरन् अपने स्वयं के लिए करता है। वह स्वार्थी है। वह पत्नी से विषय-सुख की आशा करता है। यदि कुष्ठरोग अथवा चेचक उसके सौन्दर्य को नष्ट कर देता है, तो उसके पति का प्रेम समाप्त हो जाता है। जब पत्नी की मृत्यु हो जाती है, तो पति शोकमग्न हो जाता है। ऐसा वह अपनी स्नेही जीवन-संगिनी की क्षति के कारण नहीं, वरन् इसलिए करता है कि वह अब यौन-सुख प्राप्त नहीं कर सकता है।

जब आपकी पत्नी युवती तथा सुन्दर होती है, तब आप उसके घुँघराले बाल, गुलाबी कपोलों, मनोहर नासिका, चमकीली त्वचा तथा रुपहले दाँतों की प्रशंसा करते हैं। जब वह किसी चिरकालिक असाध्य व्याधि के कारण अपना सौन्दर्य खो देती है, तब आपके लिए उसमें आकर्षण नहीं रहता। आप द्वितीय पत्नी से विवाह कर लेते हैं। यदि आपने अपनी प्रथम पत्नी से आत्म-भाव से प्रेम किया होता, यदि आपमें यह व्यापक समझ होती कि आप तथा आपकी पत्नी में एक ही आत्मा है, तब उसके प्रति आपका प्रेम शुद्ध, निःस्वार्थ, चिरस्थायी, निर्विकार तथा अपरिवर्तनशील होता। जैसे आप पुरानी मिसरी तथा पुराने चावल को अधिक पसन्द करते हैं, वैसे ही आप अपनी पत्नी से, जब वह वृद्ध हो जाती है, अधिकाधिक प्रेम करेंगे, क्योंकि ज्ञान के द्वारा आपमें आत्म-भाव आ गया है। ज्ञान ही प्रेम को और अधिक प्रगाढ़ करेगा तथा उसे चिरस्थायी बनायेगा।

शारीरिक प्रेम पशु-धर्म है। शरीर अथवा त्वचा के प्रति प्रेम राग है। यह उन्नत तथा परिष्कृत राग है। यह स्थूल तथा वैषयिक है। शरीर के प्रति राग शुद्ध प्रेम अथवा सच्चा प्रेम नहीं है। यह अज्ञानजात मोह ही है। आप इस राग के कारण ही पाप कर्म करते हैं तथा अपनी आत्मा का हनन करते हैं।

वेश्याएँ भी अपने ग्राहकों के प्रति कुछ समय तक प्रचुर प्रेम, मधुर मुस्कान प्रदर्शित करती तथा मधुमय शब्द बोलती हैं। ऐसा वे जब तक रुपया ऐंठ सकती हैं, तभी तक करती हैं। जरा मुझे स्पष्ट रूप से बतायें कि क्या आप इसे प्रेम तथा सच्चा सुख कह सकते हैं ? इसमें धूर्तता, व्यवहारकुशलता, कुटिलता तथा मिथ्याचार है। इस प्रेम में आत्म-त्याग का किंचित् अंश भी नहीं है। (अनूदित)

ब्रह्मचर्य-साधना : विवाह करें अथवा न करें ४ नवम्बर

॥॥ परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ॥॥

ब्रह्मचारी बनें अथवा गृहस्थ

कामुक लोगों के लिए ही गृहस्थाश्रम का विधान है; क्योंकि वे अपनी कामुकता पर नियन्त्रण नहीं रख सकते। यदि कोई व्यक्ति शंकराचार्य अथवा सदाशिव ब्रह्म की भाँति पर्याप्त आध्यात्मिक संस्कार, अन्तर्जात विवेक तथा वैराग्य के साथ उत्पन्न हुआ है, तो वह गृहस्थाश्रम में प्रवेश नहीं करेगा। वह तत्काल नैष्ठिक ब्रह्मचर्य अपनायेगा और तत्पश्चात् संन्यास ग्रहण कर लेगा। श्रुतियाँ भी इसका समर्थन करती हैं। जाबालोपनिषद् कहती है : ''**यदहरेव विरजेत्तदहरेव प्रव्रजेत्**॥जिस दिन वैराग्य आये, उसी दिन संन्यास ले लीजिए।''

विवाह कुछ लोगों की आध्यात्मिक प्रगति में बाधा पहुँचाता है, तो कुछ लोगों की सहायता करता है। राजा भर्तृहरि के लिए यह बाधक था और सन्त तुकाराम के लिए यह सहायक था। अन्त में व्यक्ति एक ही लक्ष्य पर पहुँचता है। यात्रा सर्वाधिक छोटी होने दें। छोटे रास्ते को लम्बे मार्ग की अपेक्षा अधिक पसन्द करें। व्यक्ति सदा यही चाहता है।

ब्रह्मचर्यमय जीवन गार्हस्थ्य जीवन से सौ गुना अधिक अच्छा है। मैं ब्रह्मचर्य में विश्वास करता हूँ; क्योंकि यह मनुष्य में गुप्त शक्तियों का उद्घाटन करता है। ब्रह्मचर्य भगवद्-साक्षात्कार का सीधा राज-पथ है; विवाह सर्पगतिक मार्ग है। पूर्वोक्त अवरोक्त की अपेक्षा अधिक अधिमान्य है; किन्तु व्यक्ति अपनी निम्न काम-वासना के कारण अवरोक्त मार्ग ही अपनाता है।

तथापि गृहस्थ भी आत्म-साक्षात्कार से मात्र इसलिए वंचित नहीं होता कि उसके कन्धों पर परिवार का भार है। सन्त तुकाराम का दो बार विवाह हुआ। उनके बच्चे भी थे। तथापि वे विमान से वैकुण्ठ पहुँच गये। यदि आपका सांसारिक जीवन के प्रति दृष्टिकोण सरल, सच्चा तथा निष्कपट है, यदि आपकी तथाकथित जीवनसंगिनी धर्मनिष्ठ है तथा सभी विषयों में आपकी आज्ञाकारी है, तो विवाह करने में कोई हानि नहीं है। किन्तु यदि विवाहित जीवन व्यक्ति के लिए भार अथवा अभिशाप बनने की अधिक सम्भावना हो, तो व्यक्ति विवाह ही क्यों करे तथा ऐसी बेड़ी में अपने को क्यों उलझाये, जिसे कभी दो टुकड़ों में काटा नहीं जा सकता है?

यदि आप अति-नियमनिष्ठ ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहते हैं, तो विवाह न करें। अपने को यह कह कर प्रवंचित न होने दें॥''विवाह के पश्चात् मैं अति-नियमनिष्ठ ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करूँगा।'' बाद में यह इस ब्रह्मचर्य-व्रत के त्याग करने का अपना तर्क आपके सम्मुख प्रस्तुत करेगा। आपका धर्म है भगवद्-साक्षात्कार।

आपकी पूर्ववर्ती सभी विविध पशु-योनियों में इन्द्रियों तथा यौन का पर्याप्त तुष्टिकरण हुआ है। पशु-जीवन यौन तथा जिह्वा की निम्न अभिरुचियों की तृप्ति के लिए है; किन्तु मानव-जीवन महत्तर उद्देश्यों के लिए है। हे मानव! आप काठ-कोयले का काम लेने के लिए चन्दन-वृक्ष को क्यों जलाते हैं? यह मानव-जीवन बहुमूल्य है। देवता भी इससे ईर्ष्या करते हैं। एक जीवन को गँवा देने का अर्थ हैह्वह्वभगवान् बनने के एक स्वर्णिम अवसर को गँवा देना।

विषय-सुख तृष्णा बढ़ाने वाला है। व्यक्ति जब तक अभिप्सित पदार्थ पर अधिकार प्राप्त नहीं कर लेता, तभी तक सम्मोहन रहता है। पदार्थ पर अधिकार प्राप्त कर लेने के पश्चात् उसे पता चलता है कि वह उसमें उलझ गया है। कुँवारा व्यक्ति प्रतिदिन विवाह के विषय में सोचता रहता है; किन्तु उपभोग उसको सन्तोष प्रदान नहीं करता है और न कर ही सकता है। इसके विपरीत यह केवल उसकी वासना को बदतर तथा तीव्र करता है और काम-वासना तथा लालसा के द्वारा उसके मन को और अशान्त बनाता है। उसको ऐसा अनुभव होता है कि वह कारावास में है। यह माया का इन्द्रजाल है। यह संसार प्रलोभनों से भरा है।

आप सांसारिक पदार्थों में आनन्द नहीं प्राप्त कर सकते हैं। यह केवल भौतिकवादी विष है। इसके अतिरिक्त विवाह एक अभिशाप तथा आजीवन कारावास है। यह इस भूतल पर सबसे बड़ा बन्धन है। उस कुँवारे व्यक्ति को जो एक समय स्वतन्त्र था, अब जुआ लगा दिया गया है और उसके हाथों तथा पैरों में बेड़ियाँ डाल दी गयी हैं। ऐसा निरपवाद रूप से सभी विवाहित व्यक्तियों का अनुभव है। अतः यदि आप टाल सकते हैं, तो विवाह न करें। विवाह के पश्चात् बचाव कठिन होगा। आध्यात्मिक मार्ग के जीवन की महिमा तथा विवाहित जीवन की महान् कठिनाइयों, चिन्ताओं, परेशानियों तथा झंझटों को अनुभव कीजिए। तीव्र वैराग्य का विकास कीजिए। भगवद्-चेतना के अपने जन्म-सिद्ध अधिकार का दावा कीजिए। क्या आप वास्तव में स्वयं ब्रह्म नहीं हैं?

पत्नी पति के जीवन को काटने की तीव्र छुरी है। यदि स्वर्ण-कण्ठहार तथा रेशम की बनारसी साड़ियाँ नहीं उपलब्ध की जातीं, तो पत्नी पति पर भौंहें चढ़ाती है। पति ठीक समय पर अपना भोजन नहीं पा सकता है। पत्नी तीव्र उदर-शूल से पीड़ित होने का झूठा बहाना बना कर बिस्तर पर लेट जाती है। आप यह तमाशा अपने घर में देख सकते हैं और प्रतिदिन अनुभव कर सकते हैं। निश्चय ही मुझे आपसे अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। अतः शान्ति के साथ विवाह कीजिए तथा वैराग्य नामक योग्य पुत्र और विवेक नाम की उदारचेता पुत्री प्राप्त कीजिए तथा आत्मज्ञान-रूपी सुस्वादु फल का आस्वादन कीजिए जो आपको अमर बना सकता है।

पत्नी एक विलासिता की वस्तु है। यह आत्यन्तिक आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक गृहस्थ विवाह के पश्चात् रो रहा है। वह कहता हैह्वह्व"मेरा पुत्र आन्त्र ज्वर (टाइफाइड) से रुग्ण है। मुझे अपनी दूसरी पुत्री का विवाह करना है। मुझे ऋण चुकाना है। मेरी पत्नी एक स्वर्ण-हार खरीदने के लिए परेशान कर

रही है। मेरे ज्येष्ठ जामाता की अभी हाल में मृत्यु हो गयी।'' (अनूदित)

ब्रह्मचर्य-साधना : विवाह करें अथवा न करें ५ दिसम्बर

ह्ल परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ह्ल

विवाह न कीजिए। विवाह न कीजिए। विवाह न कीजिए। विवाह के पश्चात् बचाव कठिन है। विवाह सबसे बड़ा बन्धन है। स्त्री निरन्तर उत्पीड़न तथा अशान्ति का स्रोत है। बुद्ध, पट्टिनत्तु स्वामी, भर्तृहरि, तथा गोपीचन्द ने क्या किया? क्या वे स्त्री के बिना सुख तथा शान्ति से नहीं रहे?

इस पार्थिव जगत् में काम सबसे बड़ा शत्रु है। यह मनुष्य को निगल जाता है। मैथुन के अनन्तर बहुत विषाद होता है। आपको अपनी पत्नी को प्रसन्न रखने तथा उसकी आवश्यकताओं और विलास-वस्तुओं की पूर्ति के लिए धनोपार्जन करने में अत्यधिक प्रयास करना पड़ता है। धन प्राप्त करने में आप विविध प्रकार के पाप करते हैं। आप मन से अपनी पत्नी के कष्ट तथा शोक में और अपने बच्चों के कष्ट तथा दुःख में भी भागीदार बनते हैं। आपको परिवार को चलाने के लिए सहस्रों प्रकार की चिन्ताएँ करनी पड़ती हैं। क्योंकि दो मन सहमत नहीं हो सकते, अतः घर में सदा कलह होता रहता है। आपको व्यर्थ ही अपनी आवश्यकताओं तथा उत्तरदायित्वों को बढ़ाना होता है। आपकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। वीर्य-द्रव की भारी क्षति के कारण आप रोगों, अवसाद, दुर्बलता तथा जीवन-शक्ति की क्षति से आक्रान्त होंगे। इसके परिणाम-स्वरूप आपकी असामयिक मृत्यु होगी। अतः अखण्ड ब्रह्मचारी बनें तथा दुःखों, चिन्ताओं और झंझटों से अपने को मुक्त करें।

प्रकाश की उपस्थिति में अन्धकार नहीं रह सकता है। इसी प्रकार विषय-सुख की उपस्थिति में आत्मानन्द नहीं रह सकता है। सांसारिक लोग विषय-सुख तथा आत्मानन्द एक ही समय में, एक ही पात्र में चाहते हैं। यह सर्वथा असम्भव है। वे सांसारिक वैषयिक सुख का परित्याग नहीं कर सकते। वे अपने विश्वास की गहनतम अनुभूति में सच्चा विश्वास नहीं रख सकते हैं। वे बातें अधिक करते हैं। सांसारिक व्यक्ति समझते हैं कि वे सुखी हैं; क्योंकि उन्हें कुछ अदरक-मिश्रित बिस्कुट, कुछ धन तथा स्त्री प्राप्त हैं। इन बेचारे प्राणियों को और क्या चाहिए? काम-वासना के द्वारा संसार में अधिक भिखमंगे उत्पन्न होते हैं। सभी सांसारिक सुख आरम्भ में अमृत प्रतीत होते हैं; किन्तु परिणाम में सांघातिक विष बन जाते हैं। जब व्यक्ति विवाहित जीवन में फँस जाता है, तो वह मोह के विविध बन्धनों को कठिनाई से तोड़ पाता है। अतः इस भ्रामक जीवन में निष्ठा रखना त्याग दें। निर्भीक रहें। इन्द्रियों तथा मन पर नियन्त्रण रखें। आपमें वैराग्य का विकास होगा। आप ब्रह्मचर्य में पूर्णतया प्रतिष्ठित होंगे।

अखण्ड ब्रह्मचारी

यदि आप बारह वर्षों तक अखण्ड ब्रह्मचारी रह सकें, तो आप किसी अन्य साधना के बिना ही तत्काल भगवद्-साक्षात्कार कर लेंगे। आप जीवन

के लक्ष्य को प्राप्त कर चुके हैं। यहाँ 'अखण्ड' शब्द पर ध्यान दीजिए।

वीर्य-शक्ति एक प्रभावशाली शक्ति है। वीर्य ब्रह्म ही है। जिस ब्रह्मचारी ने पूरे बाहर वर्षों तक अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन किया है, वह **'तत्त्वमसि'** महावाक्य के श्रवण करते ही निर्विकल्प-समाधि की अवस्था प्राप्त कर लेगा; क्योंकि उसका मन नितान्त शुद्ध, सबल तथा एकाग्र होगा।

अखण्ड ब्रह्मचारी, जिसके वीर्य का एक बूँद भी स्राव बारह वर्षों तक न हुआ हो, अप्रयास ही समाधि में प्रवेश कर जाता है। प्राण तथा मन उसके सर्वथा वश में होते हैं। बाल ब्रह्मचारी अखण्ड ब्रह्मचारी का पर्यायवाची शब्द है। अखण्ड ब्रह्मचारी में प्रबल धारणा-शक्ति, स्मृति-शक्ति तथा विचार-शक्ति होती है। उसे मनन तथा निदिध्यासन के अभ्यास की आवश्यकता नहीं होती। यदि वह एक बार भी महावाक्य सुनता है, तो उसे तत्काल आत्म-साक्षात्कार प्राप्त हो जाता है। उसकी बुद्धि निर्मल तथा समझ सुस्पष्ट होती है। अखण्ड ब्रह्मचारी बहुत ही दुर्लभ हैं; किन्तु कुछ अवश्य हैं। यदि आप उचित दिशा में प्रयास करें, तो आप भी अखण्ड ब्रह्मचारी बन सकते हैं।

आपको प्रतिक्रिया के प्रति बहुत ही सावधान रहना पड़ेगा। जिन इन्द्रियों को कुछ महीनों अथवा एक-दो वर्षों तक नियन्त्रण में रखा है, यदि आप सदा सावधान तथा सचेत न रहे, तो वे विद्रोही बन जाती हैं। वे अवसर प्राप्त होते ही विद्रोह कर बैठती हैं और आपको बाहर घसीट लाती हैं। कुछ लोग, जो एक या दो वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालन करते हैं, अन्त में अधिक कामुक बन जाते हैं और अपनी (वीर्य) शक्ति का अत्यधिक अपव्यय करते हैं। कुछ लोग असुधार्य दुराचारी तथा अपने जीवन-पोत को भंग करने वाले भी हो जाते हैं।

जटा रखने तथा मस्तक और शरीर में भस्म लगाने से ही कोई अखण्ड ब्रह्मचारी नहीं बनता। जिस ब्रह्मचारी ने अपने स्थूल शरीर तथा इन्द्रियों को तो वश में कर लिया है; किन्तु निरन्तर कामुक विचारों में रमण करता रहता है, वह पक्का दम्भी है। उसका कभी भी विश्वास नहीं करना चाहिए। वह कभी भी संकटजनक बन सकता है। (अनूदित)

ब्रह्मचर्य–साधना : विवेकहीन साहचर्य से खतरा १

ह्वह्व परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ह्वह्व

किसी भी व्यक्ति के साथ अति–परिचय न कीजिए। **'अतिपरिचयादवज्ञा भवति'** ह्वह्वबहुत मेल–जोल से अवज्ञा बढ़ती है। मित्रों की संख्या न बढ़ायें। स्त्रियों के साथ मैत्री की अभियाचना न कीजिए। उनसे अत्यधिक परिचित भी न बनिए। स्त्रियों के साथ अति–परिचय अन्ततः आपके विनाश में परिसमाप्त होगा। इस बात को कभी भी न भूलिए। आपके मित्र आपके वास्तविक शत्रु हैं।

प्रतिजाति के व्यक्तियों से न मिलें। माया ऐसा छिपे–छिपे अन्तर्धारा से कार्य करती है कि आप अपने वास्तविक पतन से अवगत ही न होंगे। बिना एक क्षण की सूचना के ही काम–वासना अकस्मात् गम्भीर रूप धारण कर लेगी। आप व्यभिचार करेंगे और तत्पश्चात् पश्चात्ताप करेंगे। तब आपके चरित्र तथा यश नष्ट हो जायेंगे। अपयश मृत्यु से भी बदतर है। इससे अधिक जघन्य अन्य कोई अपराध नहीं है। इसके लिए कोई प्रायश्चित्त नहीं है। अतः सतर्क रहें। सावधान रहें।

भगवान् दत्तात्रेय ने स्त्री की एक प्रज्वलित अग्नि–कुण्ड तथा पुरुष की एक घृत–पात्र से तुलना की है। जब अवरोक्त पूर्वोक्त के सम्पर्क में आता है, तो वह नष्ट हो जाता है। अतः उसका परित्याग करें।

यदि आपको संयोगवश किसी धर्मशाला में रहना पड़े और आपके समीपवर्ती कमरे में अकेली स्त्री हो, तो आप उस स्थान को तुरन्त छोड़ दीजिए। आपको पता नहीं कि वहाँ क्या घटेगा। आप तप तथा ध्यान के अभ्यास से चाहे कितने भी शक्तिशाली हों, पर खतरे के क्षेत्र को तत्काल छोड़ देना ही सदा उचित है। अपने को प्रलोभन के जोखिम में न डालें।

जब आप आध्यात्मिक पथ पर प्रारम्भिक अवस्था में हों, तो अपने आत्म–बल तथा पवित्रता की कभी परीक्षा न करें। आध्यात्मिक पथ के नवीन पथिक को यह दिखाने के लिए कि उसमें पाप और मलिनता का सामना करने का साहस है, कभी कुसंगति में नहीं पड़ना चाहिए। यह बड़ी भारी भूल होगी। आप महान् आपत्ति में पड़ जायेंगे और शीघ्र ही आपका अधःपतन हो जायेगा। छोटी–सी अग्नि को रेत की ढेरी बड़ी आसानी से बुझा सकती है।

साधना की आरम्भावस्था में आपको महिलाओं से बहुत दूर रहना चाहिए। ब्रह्मचर्य के साँचे में पूर्णतः ढल जाने तथा उसमें प्रतिष्ठित होने के पश्चात् आप कुछ समय तक महिलाओं के साथ बहुत सावधानीपूर्वक हिल–मिल कर अपनी शक्ति की परीक्षा कर सकते हैं। उस समय भी यदि आपका मन अत्यधिक शुद्ध रहता है, यदि आपमें कामुक विचार नहीं हैं और यदि उपरति, शम तथा दम के अभ्यास के कारण मन निष्क्रिय हो गया है, तो स्मरण रखिए कि आपने सच्चा आत्म–बल प्राप्त कर लिया है और अपनी साधना में पर्याप्त प्रगति की है। अब आप

सुरक्षित हैं। आप अपने को जितेन्द्रिय योगी समझ कर अपनी साधना बन्द मत कर दीजिए। यदि आप अपनी साधना बन्द कर देते हैं, तो आपका निराशाजनक अधःपतन होगा।

योग-पथ में पर्याप्त प्रगति कर चुके उन्नत साधकों को भी बहुत सावधान रहना चाहिए। उन्हें स्त्रियों से मुक्त रूप से मिलना-जुलना नहीं चाहिए। उन्हें मूर्खतावश यह नहीं समझना चाहिए कि वे योग में परम प्रवीण हो गये हैं। एक प्रख्यात महान् सन्त का पतन हो गया। वे स्त्रियों से मुक्त रूप से मिलते थे। उन्होंने स्त्रियों को अपनी शिष्याएँ बनाया, जिन्हें वे अपने पैरों की मालिश करने देते थे। क्योंकि काम-शक्ति का उदात्तीकरण पूर्णतया नहीं किया गया था तथा वह ओज में रूपान्तरित नहीं की गयी थी, और क्योंकि कामुकता सूक्ष्म रूप से उनके मन में घात लगाये बैठी थी, वे काम-वासना के शिकार बन गये तथा अपनी प्रतिष्ठा खो बैठे। काम-वासना उनमें दमित थी और जब उपयुक्त अवसर आया, तब इसने पुनः विकट रूप धारण कर लिया। उनमें प्रलोभन का प्रतिरोध करने की शक्ति अथवा मनोबल नहीं था।

एक अन्य महात्मा, जो अपने शिष्यों द्वारा अवतार मानते जाते थे, योग-भ्रष्ट हो गये। वे भी महिलाओं से मुक्त रूप से मिलते-जुलते थे। वे एक गम्भीर भूल कर बैठे। वे कामुकता के शिकार बन गये। क्या ही खेदजनक दुर्भाग्य! साधक बड़ी कठिनाई से योग-रूपी निश्रयणी पर आरोहण करते हैं और अपनी असावधानी तथा आध्यात्मिक अहंकार के कारण अनुद्धार्य रूप से सदा के लिए नष्ट हो जाते हैं।

मानसिक कल्पनाओं की विनाश-लीला

स्त्रियों की उपस्थिति अथवा उनका ध्यान संसार के विरत और आध्यात्मिक साधना में तत्पर तपस्वियों के मन में भी प्रायः अपवित्र विचार उत्पन्न कर देता है और इस प्रकार उनकी तपश्चर्या के फल से उन्हें वंचित कर देता है। दूसरे व्यक्तियों के मन, विशेषकर आध्यात्मिक साधकों के मन में सूक्ष्म काम-वासना की उपस्थिति को जान लेना बड़ा कठिन है, तथापि दृष्टि, स्वर, भाव, गति, आचरण आदि से कुछ पता लग जाता है।

सावधानीपूर्वक ध्यान दें कि राजा भर्तृहरि ने अपने साधना-काल में क्योंकर क्रन्दन करते हुए कहा थाह्न ''मेरे प्रभो! मैंने अपनी पत्नी त्यागी, अपना राज्य त्यागा। मैं कन्द, मूल तथा फल पर निर्वाह करता हूँ। भूमि मेरी शय्या है। नीला गगन मेरा वितान है। दिशाएँ मेरे वस्त्र हैं। तथापि मेरी काम-वासना मुझसे विदा नहीं हुई।'' काम-वासना की ऐसी शक्ति है।

जेरोम अपने संयम-संघर्ष तथा काम की प्रबलता के विषय में कुमारी यूस्टोचियम को लिखते हैंह्न ''जब मैं उस मरुस्थल में, उस सुविस्तृत निर्जन स्थान में, जो सूर्य की गरमी से झुलसता था तथा एकान्तवासियों को मात्र भयंकर आवास-स्थान प्रदान करता था, मैंने कितनी ही बार कल्पना की कि मैं रोम के आह्लादक पदार्थों के मध्य में हूँ। मैं वहाँ एकाकी था। मेरा अंग एक निकम्मे ढीले कुरते से ढका हुआ था। मेरी त्वचा हवशी की त्वचा की भाँति काली पड़ गयी थी। प्रतिदिन मैं क्रन्दन करता तथा तड़पता था और यदि मैं इच्छा न रहते हुए भी निद्रा से अभिभूत हो

जाता, तो मेरा कृश शरीर नंगी भूमि पर पड़ जाता। मैं अपने भोजन तथा पेय के विषय में कुछ नहीं कहता, क्योंकि मरुभूमि में रोगियों को भी शीतल जल के अतिरिक्त अन्य पेय उपलब्ध नहीं होता। अस्तु! मैं जिसने नरक के भय से अपने-आपको इस कारावास का दण्ड दे रखा था और जो बिच्छुओं तथा अन्य पशुओं का साथी था, प्रायः लड़कियों की टोली में होने की कल्पना करता था। उपवास से मेरा मुख पीत-वर्ण हो चला था तथा मेरे शीत शरीर के अन्दर मेरा मन वासनाओं से जल रहा था। पहले से मृत प्रतीत होने वाले शरीर में कामाग्नि की ज्वाला धधकती रहती थी।'' काम की ऐसी शक्ति है।

मन संसार का बीज है। मन ही इस संसार की सृष्टि करता है। मन से सर्वथा पृथक् कोई संसार नहीं है। सभी पदार्थों के चित्र मन में अन्तर्विष्ट हैं। जब मन पदार्थों को नहीं प्राप्त कर सकता है, तो वह इन चित्रों के साथ खिलवाड़ करता है और बड़ी तबाही करता है। यदि आप निरन्तर भगवान् के चित्र का ध्यान करें, तो पदार्थों के चित्र स्वयं नष्ट हो जायेंगे। (अनूदित)

ब्रह्मचर्य-साधना : विवेकहीन साहचर्य से खतरा २

ह्वह्व परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ह्वह्व

वर्जित फल भगवान् द्वारा आध्यात्मिक साधक की परीक्षा

भगवान् साधक के आध्यात्मिक बल की परीक्षा लेने के लिए उसके सम्मुख कुछ प्रलोभन रखते हैं। वे प्रलोभनों पर विजय प्राप्त करने के लिए उसे बल भी प्रदान करते हैं। इस संसार में सर्वाधिक प्रबल प्रलोभन काम है। सभी सन्तों को प्रलोभनों के मार्ग से हो कर गुजरना पड़ा है। प्रलोभन लाभकारी होते हैं। उनसे लोग प्रशिक्षित तथा शक्तिशाली बनते हैं।

यहाँ तक कि बुद्ध की भी मानसिक शुद्धता की परीक्षा ली गयी थी। उन्हें प्रत्येक प्रकार के प्रलोभनों का सामना करना पड़ा था। उन्हें मार का सामना करना पड़ा था। उस समय ही, उससे पूर्व नहीं, गया में बोधि वृक्ष के नीचे उन्हें बुद्धत्व की प्राप्ति हुई। शैतान ने यीशु को विविध रूपों से प्रलोभन दिया। काम बहुत ही शक्तिशाली है। अनेक साधक परीक्षाओं में असफल रहते हैं। व्यक्ति को बहुत सावधान रहना चाहिए। साधक को बहुत ही उच्चकोटि की मानसिक शुद्धता विकसित करनी होगी। तभी वह परीक्षा में टिक सकता है। भगवान् साधकों की परीक्षा लेने के लिए उन्हें बहुत ही प्रतिकूल परिस्थितियों में रखेंगे। वे युवतियों द्वारा प्रलोभित किये जायेंगे। नाम तथा यश गृहस्थियों को साधकों के निकट-सम्पर्क में लाता है। स्त्रियाँ उनकी पूजा करना आरम्भ कर देती हैं। वे उनकी शिष्याएँ बन जाती हैं। धीरे-धीरे साधकों का घोर पतन होता है। इसके अनेक उदाहरण हैं। साधकों को अपने को छिपा कर रखना चाहिए तथा अति-सामान्य व्यक्ति-सा प्रतीत होना चाहिए। उन्हें अपने चमत्कार नहीं प्रदर्शित करने चाहिए।

यद्यपि ऋषि विश्वामित्र कठोर तपस्या में रत थे, जब वे उनका तप भंग करने के लिए इन्द्र के द्वारा प्रेषित स्वर्ग की अप्सरा से मिले, तो अपनी दुर्दान्त इन्द्रियों के कारण आत्म-नियन्त्रण खो बैठे। यदि पत्ती, वायु तथा जल पर निर्वाह करने वाले विश्वामित्र तथा पराशर काम के शिकार बन गये, तो उन सांसारिक लोगों की नियति क्या होगी जो मसालेदार भोजन पर निर्वाह कर रहे हैं? यदि वे अपनी काम-वासना को नियन्त्रित कर सकते हैं, तो विन्ध्याचल पर्वत सागर में तैरने लगेगा तथा अग्नि अधोमुखी जलेगी।

नैसर्गिक काम-प्रवृत्ति सर्वाधिक शक्तिशाली है। कामावेग दुर्जेय है। यह मन के अन्तर्भौम कक्ष में अपने को छिपाये रख सकता है और जब आप असावधान होंगे, उस समय यह आप पर आक्रमण कर बैठेगा। यह दोगुनी शक्ति से आप पर आक्रमण करेगा। विश्वामित्र मेनका के शिकार बने। एक अन्य महान् ऋषि रम्भा के शिकार बने। जैमिनि एक मिथ्या महिला मासा से उत्तेजित हो उठे। एक प्रभावशाली ऋषि मछली को जोड़ा खाते देख कर उत्तेजित हो उठे थे। एक गृहस्थ साधक अपनी गुरु-पत्नी को ही ले

कर भागे। अनेक साधक इस गुप्त आवेग से, विश्वासघाती शत्रु से अवगत नहीं हैं। वे समझते हैं कि वे सर्वथा सुरक्षित तथा शुद्ध हैं। जब उनकी परीक्षा ली जाती है, तो वे निराशाजनक शिकार बनते हैं। सदा एकाकी रहें, ध्यान करें तथा इस आवेग को मार डालें।

अज्ञानी तथा कामुक व्यक्ति के लिए कामिनी और कांचन भगवान् से अधिक उज्ज्वल चमकते हैं। माया शक्तिशाली है। आदम एक क्षण असावधान होने के कारण पतित हो गये। हौवा ने एक ही कामना के कारण प्रलोभित किया। वर्जित फल मानव-नेत्रों के सम्मुख तत्काल परिपक्व हो जाता है। एक स्थाणु ज्योतिर्मय देव की भाँति दृष्टिगोचर होता है और आपको अपने सम्मुख परम विनम्रता से नतमस्तक होने के लिए प्रेरित करता है। माया तथा उसके जाल से सावधान रहें। स्वर्ण की शृंखला दो टुकड़ों में काटी जा सकती है; परन्तु माया का कौशेय जाल नहीं काटा जा सकता है। असावधानी का एक ही क्षण मोतियों की सम्पूर्ण मंजूषा को काम-वासना तथा कामुकता के अन्धकारपूर्ण अगाध गर्त में उलट जाने के लिए पर्याप्त है।

सरोवर में शैवाल जो क्षण-भर के लिए विस्थापित हो जाता है, पल-मात्र में अपनी आद्य-स्थिति को पुनः धारण कर लेता है। इसी भाँति यदि ज्ञानी पुरुष एक क्षण भी असावधान रहें, तो माया उन्हें भी आवृत कर लेती है। अतः आध्यात्मिक पथ में अनिद्र सतर्कता की आवश्यकता है। लोकोक्ति है **''कानी के ब्याह में नौ सौ जोखिम।''** ज्ञान-रूपी फल को आपके खाने से पूर्व ही बन्दर-रूपी माया आपके हाथ से छीन ले जायेगी। यदि आप उसे निगल भी जायें, तो वह आपके गले में अटक सकता है। अतः भूमा अथवा परमोच्च साक्षात्कार प्राप्त होने तक आपको सतत सतर्क तथा सावधान रहना होगा। धोखे से यह समझ कर कि आपने अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है, आपको अपनी साधना बन्द नहीं करनी चाहिए।

जो व्यक्ति एकान्त में रहता है, वह प्रलोभनों तथा खतरे से अधिक अरक्षित होता है। उसे बहुत ही सतर्क और सावधान रहना होगा। उसके मन को कुछ भी कर बैठने का लोभ आयेगा; क्योंकि वहाँ उसके दुष्कृत्यों को देखने वाला कोई भी नहीं होता। सभी दमित कुवृत्तियाँ उसके ऊपर दोगुनी शक्ति से आक्रमण करने के अवसर की प्रतीक्षा करती रहेंगी । वह ठीक उस व्यक्ति की तरह है जो एक बड़े थैले में व्याघ्र, सर्प तथा रीछ के साथ डाल दिया गया हो। क्रोध, काम तथा लोभ-रूपी शत्रु आपके अनजाने ही आप पर अधिकार कर लेंगे। जब आप अध्यात्म-पथ पर अकेले चलते हैं, तब वे उन दस्युओं की भाँति आप पर आक्रमण करेंगे जो सघन वन में एकाकी पथिक पर आक्रमण करते हैं। अतः सदा ज्ञानियों की संगति में रहिए। पथ-भ्रष्ट न बनिए। (अनूदित)

इतिहास एवं पुराण १ अ़गस्त

ह्न परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज ह्न

इतिहास एवं पुराणों का उदय

जिस ब्रह्म का ऋषि गण श्रद्धा-युक्त विस्मय की भावना से मनन करते हैं, उसका साक्षात्कार सर्वोत्तम प्रकार के थोड़े से व्यक्ति अथवा उपनिषदों में वर्णित साधना-पथ पर चलने की क्षमता रखने वाले कुछ लोग ही कर सकते हैं। किन्तु धर्म को तो ब्रह्म-साक्षात्कार के क्षेत्र से इतर कम महत्त्वपूर्ण स्तरों के व्यक्तियों की भावनात्मक आवश्यकताओं के बारे में भी सोचना है। दर्शन का कोई भी इतिहासकार इस गलत धारणा से मुक्त नहीं हो पाया है कि वेद और उपनिषद् तथा परवर्ती वेदान्त-दर्शन के ग्रन्थों के बाद जो-कुछ भी धार्मिक विवेचन किया गया, वह अधिक-से-अधिक जन-साधारण की स्वाभाविक दुर्बलताओं के साथ किया गया एक समझौता है या दूसरे शब्दों में, उन्हें दी गयी एक छूट है। यहाँ यह कहने की आवश्यकता नहीं कि यदि हिन्दू-धर्म वेदों, उपनिषदों के दिव्य दर्शन तथा बुद्धि-प्रधान वेदान्त की तत्त्वमीमांसा के साथ ही निःशेष हो जाता, तो वर्षों पूर्व ही इसका अन्त हो गया होता तथा बेबीलोन, ग्रीस और मिश्र की संस्कृतियों के समान केवल इसकी स्मृति ही शेष रह जाती। हिन्दुओं की विचार-धारा की विश्व-व्यापकता ही उनके धर्म को विदेशी संस्कृतियों के प्रहारों से बचा पायी है तथा इसी के कारण यह समय के उतार-चढ़ावों के बीच भी सुरक्षित रह पाया है।

भारत का महान् धर्म मात्र बुद्धि और तर्क के क्षेत्रों अथवा केवल अनुभवजन्य आवश्यकताओं तक ही सीमित नहीं है। इसका सम्बन्ध पूरे मानव-समुदाय से है। मानव-आकांक्षाएँ पाश्चात्य या प्राच्य नहीं हुआ करतींह्नह्नवे तो समूचे विश्व की होती हैं। विस्मयकारी ब्रह्म तक सेवक, किसान, सैनिक, व्यापारीह्नह्नसभी की पहुँच होनी चाहिएह्नह्नइस प्रकार कि उनके बौद्धिक स्तर के अनुरूप वह उनके लिए बोधगम्य हो तथा उनकी प्रतिभा और स्वभाव के लिए व्यावहारिक सिद्ध हो सके। उपनिषदों के अनुसार विशेष अर्हताओं वाले व्यक्तियों के लिए ही ब्रह्म उपगम्य है; परन्तु पुराणों ने सामान्य मानवों के लिए भी ब्रह्म को सुगम बनाया है।

रामायण तथा महाभारत भारतवर्ष के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक महाकाव्य हैं। महाभारत ग्रन्थ का आधार परम्पराएँ, पौराणिक कथाएँ, इतिहास, दर्शनशास्त्र तथा रहस्यवाद के विभिन्न तत्त्व हैं। रामायण प्रत्यक्ष रूप से एक इतिवृत्त (इतिहास) है, जिसमें एक ऐसे आध्यात्मिक महापुरुष के महान् कार्यों का वर्णन किया गया है जो इस धरती पर मानव-समुदाय के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करने के लिए अवतरित हुआ था। महाभारत में अलौकिक एवं अद्भुत तत्त्वों के आकाश में उड़ान भरी गयी है, परन्तु साथ-ही-साथ मानव-जीवन के लक्ष्य के स्वरूप को बहुत सरल ढंग से प्रतिपादित भी किया गया है।

अलंकृत शैली में प्रस्तुत वाल्मीकि कृत रामायण में प्रारम्भ से अन्त तक मानव-हृदय को आन्दोलित करने वाली सामग्री है। इस ग्रन्थ का पठन करने के पश्चात् भावनाओं का उदात्तीकरण हो जाता है तथा मानव-मन अनजाने में ही संजीवित हो कर मानवोचित सहृदयता, भ्रातृ-भाव, पुत्रोचित प्रेम, नियम-पालन, सेवा-भाव, ऋजुता (ईमानदारी), संकल्प-दृढ़ता, असीमित परोपकारिता, सत्य के अटल अनुसरण की भावभूमियों में प्रवेश कर जाता है। दूसरी ओर, महाभारत महर्षि व्यास की प्रतिभाशाली अन्तर्दृष्टि की सर्वोत्तम उपज है। यह ग्रन्थ भावनाओं एवं संवेगों की एक ऐसी असीमित ऊँचाई तक ले जाता है जहाँ से उन्हें नैतिक और आध्यात्मिक आदर्शों की पूर्णता के शिखर दृष्टिगोचर होते हैं। पाठक ग्रन्थकार के सशक्त विचारों की ऊर्मियों से टकराता हुआ डूबता-उतराता रहता है। वाल्मीकि और व्यास भारतीय संस्कृति के वास्तविक आधार-स्तम्भ हैं। जब तक हिन्दुत्व जीवित रहेगा, इन दोनों महापुरुषों को स्मरण किया जाता रहेगा। रामायण और महाभारत के महान् पात्रह्वह्वराम, लक्ष्मण, भरत, सीता, हनुमान्, कृष्ण, युधिष्ठिर, भीष्म, अर्जुन, द्रौपदीह्वह्वभारत में नन्हें से विद्यार्थी के लिए भी आदर्श का पर्याय बन गये हैं। इनका स्मरण करते ही ऐसा प्रतीत होने लगता है कि व्यक्तित्व का प्रत्येक अणु एक असामान्य उच्चता से परिपूरित हो गया है। इन दोनों ग्रन्थों ने भारतीय मानस के समक्ष एक ऐसा शक्तिशाली परन्तु करुणामय भगवान् का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है जो समस्त जीवों का भाग्यविधाता है तथा उनकी कृपा-दृष्टि से कृतार्थ होने को आतुर मानवों का सहायक है। इन्हीं ग्रन्थों के प्रभाव के कारण युगों-युगों से भारत निर्माण के पथ पर अग्रसर होता रहा है और भारतीय मानस धार्मिकता से सन्तृप्त रहा है। इन्हीं ग्रन्थों ने ब्रह्म-साक्षात्कार को जीवन के लक्ष्य के रूप में प्रतिष्ठित करके इस धारणा को जन्म दिया है कि इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ऋषियों और ईश्वर के अनेकानेक भक्तों से सहायता प्राप्त हो सकती है। ये ग्रन्थ ही हिन्दू-जनों के हृदयों को एक-दूसरे के निकट ला सके हैं। आज भारत एक शक्तिशाली राष्ट्र है और वह इसके अस्तित्व को खतरे में डालने वाले किसी भी विदेशी प्रहार का सामना करने के लिए सक्षम है। इसका कारण यही है कि वाल्मीकि और व्यास के सर्वोत्कृष्ट मस्तिष्कों ने राष्ट्र के रक्त में एक विलक्षण नैतिक साहस भर दिया है। इन दोनों महापुरुषों के विचारों ने भारतीय मानस पर जो प्रभाव डाला है, वह इतना गहन है कि इसका सही-सही मूल्यांकन करना असम्भव लगता है। उनका प्रभाव अमिट है; क्योंकि उनकी पहुँच मानव-सत्ता के मूल-तत्त्व तक रही है।

ये दोनों ग्रन्थ कालिदास, भवभूति, भारवि, माघ, श्रीहर्ष, तुलसीदास, कम्बन आदि महाकवियों के प्रेरणा-स्रोत रहे हैं। **''व्यासोच्छिष्टं जगत्सर्वम्''**ह्वह्वविश्व के समस्त साहित्य के मूल्यवान् विचार व्यास-वाणी में पाये जाते हैंह्वह्वइस कथन से पता चलता है कि व्यासकृत उपर्युक्त ग्रन्थ की विषय-सामग्री कितनी मूल्यवान् है! महाभारत के अनुसारह्वह्व''जो-कुछ यहाँ (महाभारत ग्रन्थ में) है, चाहे वह नैतिकता और राजनीति से सम्बन्धित हो, चाहे मानव-कल्याण तथा आध्यात्मिक मोक्ष से, वह अन्यत्र भी पाया जा सकता है। जो यहाँ नहीं है, उसे

कहीं भी नहीं पाया जा सकता।'' साधारण हिन्दू जिस धर्म को जानता है और पालन करता है, वह इन महाकाव्यों और पुराणों में ही वर्णित धर्म है। इन्हीं सद्ग्रन्थों ने भारत के राष्ट्रीय चरित्र को आध्यात्मिकता के रंग में रँगा है। भारत का धार्मिक व्यक्ति जिस ईश्वर से प्रार्थना करता है या जिस पर मनन करता है, वह इन्हीं सद्ग्रन्थों का ईश्वर है। भारत का लोकप्रिय धर्म, रूढ़िवादी धार्मिक विशिष्ट वर्ग के लोगों का धर्म, जन-जन का धर्म वही धर्म है जिसका इन ग्रन्थों में प्रतिपादन किया गया है। भारत के त्यौहार, उत्सव, अनुष्ठान, रीति-रिवाज, प्रथाओं का मूल स्रोत वाल्मीकि और व्यास के ये दोनों ग्रन्थ ही रहे हैं। यह आश्चर्य की बात है कि इसके बावजूद दर्शन के इतिहासकारों ने, यहाँ तक कि कुछ भारतीय इतिहासकारों ने भी, इन सद्ग्रन्थों का अत्यन्त त्रुटिपूर्ण ढंग से मूल्यांकन किया है और कुछ ने तो इनके अस्तित्व तक को नकारा है, मानो धार्मिक साहित्य में वे कूड़ा-करकट के समान हों। वस्तुतः भावात्मक विषाद की स्थिति में हतोत्साहित हो कर धार्मिक जन सदैव-सदैव से इन ग्रन्थों से ही प्रेरणा ग्रहण करके सान्त्वना के अमृत-कण प्राप्त करते रहे हैं।

भारतीय संस्कृति के इन दोनों निर्माताओं की महत्ता को देखते हुए सम्भवतः यह मूल्यांकन भी पर्याप्त नहीं है। आशा है, दार्शनिक और धार्मिक इतिहास के विद्यार्थी इन महाकाव्यों के सागर में पुनः प्रवेश करके इनमें निहित बहुमूल्य विचारों के अन्याधिक मोती ढूँढ़ कर लायेंगे। इन महाकाव्यों के आशय को समझे बिना भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों को समझ पाना कठिन है। महाभारत में कहा गया है कि वेद उन व्यक्तियों से भयभीत रहते हैं, जिन्होंने इन महाकाव्यों और पुराणों का अध्ययन नहीं किया है। वेदों में जो सत्य है, उसी को इन महाकाव्यों में प्रस्तुत किया गया है। इस सत्य की अनभिज्ञता से वे (व्यक्ति) इन वेदों पर सचमुच ही मारक प्रहार करेंगे। (अनूदित)

इतिहास एवं पुराण २ सितम्बर

ह्वह्व परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज ह्वह्व

शिक्षण-विधियों के रूप में इतिहास तथा प्रतीकशास्त्र

महाकाव्यों में विषय का प्रतिपादन जिस ढंग से किया गया है, वैसा वेद-संहिताओं और उपनिषदों में नहीं पाया जाता। वेद-उपनिषदों में परम सत्य अथवा परम तत्त्व की बात सीधे कह कर उसका समर्थन ब्रह्माण्ड-व्यापी एकता का रहस्योद्घाटन करके किया जाता है। इस प्रकार पाठक की बुद्धि पर ठोस तथ्यों के अपरोक्ष निरूपण का भार सीधा ही डाल कर विचारों का सम्प्रेषण किया जाता है। महाकाव्यों और पुराणों के ग्रन्थकार यह भली-भाँति जानते थे कि विचार-सम्प्रेषण की यह विधि जन-साधारण के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः उन्होंने एक ऐसी विधि अपनायी जो सर्व-साधारण के लिए बोधगम्य थी। मन की यह प्रवृत्ति है कि वह सुन्दरता को प्रेम करता है, चमत्कार के प्रति श्रद्धा रखता है, रहस्य से भय खाता है तथा शौर्य का अनुकरण करता है। विद्वज्जन तथा दार्शनिक प्रकृति के व्यक्तियों में भी प्रेम और सहानुभूति की भावनाएँ रहती हैं। न्याय का आदर्श उन्हें भी प्रिय रहता है। उच्च कोटि के तत्त्वमीमांसक भी मानवीय पक्षों से अछूते नहीं रहते। मानवीय व्यक्तित्व के इस पहलू को समझना थोड़ा कठिन है; परन्तु जो इसे नहीं समझता, वही अपने सामाजिक जीवन में असफल रहता है। मानव-मन को सदैव विविधता प्रिय है। एकरसता उसे भाती नहीं। यदि वह प्रेम करता है, तो घृणा भी करता है। वह पूर्वाग्रहों के घेरे में भी फँसता है। यहाँ तक कि वह कट्टर धर्मान्ध तथा दुराग्रही भी बन जाता है। इतने विलक्षण संघटकों का मिश्रण है यह मन। वेद और उपनिषदों में मन की इस विलक्षणता का ध्यान नहीं रखा गया है। मानव अपने वास्तविक स्वरूप में जैसा भी है, उसे अपने दैनिक जीवन में मित्र, दार्शनिक तथा मार्ग-दर्शक की आवश्यकता पड़ती ही है। इस आवश्यकता की पूर्ति ये दोनों महाकाव्य भली-भाँति करते हैं।

ये महाकाव्य हतोत्साहित मानवता के लिए प्रेरणा-स्रोत रहे हैं। उन अपराजेय राम के बारे में सोचिएह्वह्वसत्य और न्याय के जो आदर्श थे, दुष्टता के लिए जो वज्र के समान थे, सरल और निश्छल व्यक्तियों के लिए जो सान्त्वना के स्रोत थे, शरणागत शत्रु के लिए जो क्षमा के साक्षात् विग्रह थे, अपने चरित्र-बल से जो प्रत्येक मानव के हृदय में भक्ति, श्रद्धा और भयह्वह्वये तीनों प्रकार के भाव एक-साथ उत्पन्न करते थे। उन अद्भुत कृष्ण के बारे में विचार कीजिए जो पृथ्वी और स्वर्गलोक में एक ही समय में विचरण करने की क्षमता रखते थे, स्व-कथन मात्र से ही भूप-भूपालों को सत्ता-विहीन कर सकते थे, जो सर्वशक्तिमान् ब्रह्म के ब्रह्माण्ड-व्यापी स्वरूप को धारण कर सकते थे; परन्तु जिन्होंने युधिष्ठिर के राजसूय-यज्ञ में पधारने वाले अतिथियों का पद-प्रक्षालन भी किया था, जो उनसे प्रेम-भाव रखने

वाली रूपवती बालाओं को मोहित कर लेते थे, जिन्होंने आँसू बहाती द्रौपदी को सान्त्वना प्रदान की थी, विषाद-युक्त आत्म-संशयी अर्जुन में जिन्होंने साहस का संचार किया था, रणभूमि में जिन्होंने भयभीत करने वाले राजाओं को भी आतंकित कर दिया था, जो दर्शन के गहनतम तथ्य उद्घाटित कर सकते थे, शूरवीर सैनिक की तरह युद्ध कर सकते थे, ध्यानस्थ योगियों को दिव्य दर्शन दे सकते थे। मात्र दृष्टिपात करके कौरवों की समूची सेना को सम्मोहित कर सकते थे, ब्रह्मा और रुद्र से मित्रवत् व्यवहार कर सकते थे, परन्तु जो महाभारत के युद्ध में अर्जुन के रथ के सारथि भी बने थे, जो सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमत्ता के दिव्य स्रोत थे, जो सर्वोत्तम योगाचार्य थे और जो प्रेम के केन्द्र-बिन्दु और कर्मठता के जीवन्त उदाहरण थे। उनका व्यक्तित्व लौकिकता और अलौकिकता के सम्मिश्रण से पूर्ण बन गया था। व्यास ने कृष्ण का जो अद्भुत विवरण प्रस्तुत किया है, वह पाठकों को आनन्दातिरेक की ऐसी स्थिति में पहुँचा देता है जिसे तनिक भी अधिक गहराई से मनन करने से सम्भवतः उनके भौतिक शरीर झेल न सकें। युधिष्ठिर और उनके सदाचार पर मनन कीजिएह्वह्वजब भरी सभा में द्रौपदी का अपमान हुआ था तो कौरवों की नीचता और ढिठाई को उन्होंने किस प्रकार सहन किया था, जिन्होंने दुष्ट दुर्योधन को भी गन्धर्व चित्रसेन के बन्धन से मुक्त करवा दिया था, वनवास की अवधि में शत्रुओं का सामना करने के लिए शस्त्र धारण करने हेतु भाइयों के उत्तेजित करने पर भी जिन्होंने अपने असीम धैर्य का परिचय दिया था, अपनी सुध-बुध के बल पर ही जो निर्भीकता से कौरवों की सेना के बीच गुरु जनों का आशीर्वाद प्राप्त करने पहुँच गये थे, जिन्होंने यक्ष के चंगुल में फँसे अपने चारों भाइयों में अपने सगे पराक्रमी भाइयों के स्थान पर अपने सौतेले भाई की प्राण-रक्षा के लिए उनसे (यक्ष से) प्रार्थना की थी, जिन्होंने स्वर्गारोहण के समय एक वफादार कुत्तेह्वह्वजिसने पूरी यात्रा में उनका साथ दिया थाह्वह्वको छोड़ कर स्वर्ग जाना पसन्द नहीं किया था। कौन ऐसा होगा जो आँखों में आँसू लाये बिना युधिष्ठिर का स्मरण कर सके! अर्जुन की दक्षता, भीम की शक्ति, हनुमान् की वीरता, द्रौपदी के दुःख, सीता के संकट, दमयन्ती की दुर्दशा, लक्ष्मण के साहस, भरत के त्याग, भीष्म की महत्ता, वसिष्ठ के दिव्य गौरव पर भी विचार कीजिए, जिनके प्रभाव से धरती के अत्यन्त प्रभावशाली अस्त्र-शस्त्र भी निष्फल हो गये थे। व्यास की विद्वत्ता, शुक के ब्रह्म-साक्षात्कार और दिव्य नर-नारायण के गौरव को भी क्या कोई भुला सकता है! इन महापुरुषों का जीवन-चरित्र पढ़ते समय कौन ऐसा होगा जो उच्च जीवन व्यतीत करने की आकांक्षा तथा आश्चर्य, पुलक, प्रेम, आतंक की भावनाओं से ओत-प्रोत न हो जाये! ये उदाहरण इन महाकाव्यों में भरे पड़े उन अगणित अविस्मरणीय उपदेशों में से चुन कर लिये गये हैं जो मानवता से दिव्यता की ओर की ऊर्ध्वमुखी यात्रा में मानव का पथ-प्रदर्शन करते हैं तथा उसके लिए अमूल्य पैतृक सम्पत्ति के समान हैं। (अनूदित)

इतिहास एवं पुराण ३ अक्तूबर

ह्वह्व परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज ह्वह्व

इन बहुमूल्य उपदेशों के अतिरिक्त इन महाकाव्यों में ब्रह्माण्ड-व्यापी महत् शक्तियों के क्रिया-कलापों का प्रतीकात्मक वर्णन भी है। ये शक्तियाँ मानव-व्यक्तित्व के अन्दर और बाहरह्वह्वदोनों ओर क्रियाशील रहती हैं। यह प्रक्रिया ब्रह्माण्ड का मूल स्वभाव है। वन में विचरते हुए राम संसार में भटकती जीवात्मा के प्रतीक हैं। उनकी धर्मपत्नी सीता मन हैं जो राम-रूपी जीवात्मा को स्वर्ण-मृग-रूपी ऐन्द्रिक विषयों के पीछे भागने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। लक्ष्मण विवेक-शक्ति और पौरुष के प्रतीक हैं। सीता-रूपी इच्छा-लोलुप मन लक्ष्मण-रूपी विवेक को अपमानित करता है और स्थिति को ठीक से न समझ पाने के कारण उसे (विवेक को) अपने पास से जाने के लिए बाध्य करता है। रावण के दश शिर दश इन्द्रियों के प्रतीक हैं। समस्त इन्द्रियाँ मिल कर सीता-रूपी मन का अपहरण करती हैं और रामह्वह्वजीवात्माह्वह्वबिलकुल अकेले रह जाते हैं तथा जीवन के अरण्य में अपनी जीवन-संगिनी सीताह्वह्वमनह्वह्वको खोजते-फिरते हैं। इस प्रतीकात्मक वर्णन का दूसरा अर्थ यह भी है कि सीता-रूपी जीवात्मा राम-रूपी परम तत्त्वह्वह्वब्रह्म से पृथक् हो गयी है। रावण-रूपी मन समस्त इन्द्रियों के सहयोग से सक्रिय है। अशोकवाटिका में बैठी सीता के लिए हनुमान्-रूपी गुरु द्वारा सम्प्रेषित (राम का) शुभ सन्देश जीवात्मा की मुक्ति की सम्भावना का मंगलकारी समाचार है। गुरु की अन्तर्दृष्टि की शक्ति मन के अन्धकार को दूर कर देती है और अज्ञान-निद्रा की अवस्था में पड़े जीव को झकझोर कर जगा देती है। अपनी दहला देने वाली शक्ति द्वारा हनुमान् ने राक्षसों का दर्प-नाश करने के लिए विध्वंस-लीला की और अकेले ही उनका सामना किया। उपर्युक्त तथ्य का यह प्रतीकात्मक वर्णन है। इस वर्णन में सीता-राम का मिलन जीव तथा ब्रह्म का मिलन है जो अज्ञान-नाश के बाद ही हो पाता है।

इसी प्रकार महाभारत-ग्रन्थ भी विश्व में चल रही लीला का बहुत बड़ा प्रतीक है। दुष्टता के प्रतीक कौरव पाण्डव-रूपी उत्तमता (भलाई) को अपने देश से निर्वासित कर देते हैं। ऐसा लगता है कि प्रारम्भ में दुष्टता की विजय हुई है। इस संसार में उत्तमता या भलाई का कोई साथ नहीं देता और दुष्टता बलवती बन कर उसे अपमानित करती है। सच्चरित्रता तथा सदाचार के प्रतीक पाण्डवों को पराजित और क्षुब्ध हो कर अपना राज्य छोड़ कर जंगलों में निवास करने के लिए प्रस्थान करना पड़ता है। वन-प्रवास-काल में मुट्ठी-भर भले व्यक्तियों का सहयोग उन्हें मिलता है। उत्तमता (सदाचार) को विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। प्रारम्भिक अवस्था में उसे ईश्वर से भी सहायता नहीं मिलती। कृष्ण सुदूर किसी स्थान पर बहुत व्यस्त हैं, पाण्डवों के संकट से नितान्त अनभिज्ञ। इसी बीच वचन-भंग करने का प्रलोभन भी

सामने आता है। अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव तथा द्रौपदी युधिष्ठिर को परामर्श देते हैं कि वनवास की अवधि पूरी होने से पहले ही कौरवों से प्रतिशोध लेना चाहिए। धर्माचरण और सदाचार के प्रतीक दूरदर्शी युधिष्ठिर भली-भाँति समझते हैं कि यह उचित नहीं है। दुःखों और कष्टों की अग्नि-परीक्षा का अन्त होता है। उत्तमता को शुभ प्रतिफल प्राप्त होता है। शस्त्रधारी सेना पाण्डवों की सहायक बनती है। उत्तमता के भाग्य की डोर कृष्ण के रूप में स्वयं ईश्वर अपने हाथों में ले लेते हैं। दुष्टता के साथ युद्ध प्रारम्भ हो जाता है।

महाभारत के युद्ध में अर्जुन के रथ के सारथि कृष्ण हैं। कठोपनिषद् में भी रथ-रथी-सारथि का रूपक है। जीवन-संग्राम में जो मार्ग-दर्शक सिद्धान्त है अथवा जो मानव की सर्वोत्कृष्ट बुद्धि है, वही सारथि है। अर्जुन जीवात्मा है। अश्व इन्द्रियाँ हैं। शरीर रथ है। मन लगाम है। ऐन्द्रिय विषय रथ का मार्ग तथा वे दिशाएँ हैं जिनकी ओर रथ बढ़ता है। दुष्टता के साथ छिड़े महाभारत-युद्ध में न केवल दुर्योधन की घोर दुष्टता का वरन् परिवर्तित होती हुई परिस्थितियों की सूक्ष्मता से बेखबर भीष्म का असमीचीन रूढ़िवाद और परम्परा के प्रति मोह का, द्रोण के व्यक्तित्व में पायी जाने वाली ज्ञान-शक्ति की अन्याय के साथ साँठ-गाँठ का तथा कर्ण के चरित्र में परिलक्षित कुसंग के कारण दूषित चरित्र और योग्यता का भी सामना करना पड़ता है।

समस्त ब्रह्माण्ड के भाग्य के नियन्ता ईश्वर की अपनी अलग योजना है, जिसके अनुसार योगाचार्य कृष्ण (भगवद्गीता में वर्णित) अपने सदुपदेशों द्वारा भ्रमित जीवात्मा (अर्जुन) को जाग्रत करते हैं और अपने विश्व-रूप के माध्यम से उसमें उत्साह का संचार करते हैं। साथ ही, दुष्टता का विनाश तथा धर्म को संस्थापित करने का कार्य भी स्वयं ही करते हैं। जीवात्मा उनका उपकरण मात्र बन कर रह जाता है। शरीर-रूपी रथ में जब तक ईश्वर उपस्थित रहता है, यह क्रियाशील रहता है। जैसे ही कृष्ण अर्जुन के रथ से उतरते हैं, रथ राख की ढेरी बन जाता है। जब जीव में वास्तविक आत्म-समर्पण का भाव उत्पन्न होता है, तब ईश्वर स्वयं उसकी चिन्ता करते हैं। आवश्यकता पड़ने पर कृष्ण भीष्म से युद्ध करने के लिए शस्त्र उठा लेते हैं। जयद्रथ-वध के प्रसंग में यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जीव की प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए ईश्वर स्वयं तत्पर रहते हैं।

धर्म गणित के नियमों के समान अपरिवर्तनीय नहीं है। यह एक जीवन्त, ओजस्वी, परिवर्तनीय, नियन्त्रक शक्ति है। धर्म का यह स्वरूप कर्ण की पराजय में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। जब शरीर के भयानक रोगों द्वारा नष्ट हो जाने की आशंका हो, तब शल्य-चिकित्सक को उस पर चाकू चलाना ही पड़ता है। चाहे कोई पूजनीय भीष्म ही क्यों न हो, राजोचित सम्मान प्राप्त करने की पात्रता रखने वाला दुर्योधन ही क्यों न हो, यदि वह सृष्टि की दैवी व्यवस्था में बाधा उत्पन्न करता है तो उसका दमन किया ही जाना चाहिए।

महाकाव्यों के प्रतीकों के उपर्युक्त वर्णन का तात्पर्य यह नहीं है कि वे मात्र प्रतीक हैं और उनमें सत्यता नहीं है। कुछ विचारकों की धारणा है कि ये महाकाव्य किसी चतुर मस्तिष्क के कुचक्र हैं और

इनका ऐतिहासिक सत्यता से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह दृष्टिकोण अतिवादी है तथा सत्य सदैव मध्यम मार्ग में ही उपलब्ध होता है। इन ग्रन्थों के कुछ कम महत्त्वपूर्ण उपाख्यान सम्भवतः पुरानी अनुश्रुतियों या परम्पराओं से विकसित हुए होंगे, परन्तु इन ग्रन्थों के ऐतिहासिक पात्रों के अस्तित्व को सन्देह की दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए। सम्भवतः कुछ लेखक इस संसार में आध्यात्मिक या दिव्य जीवन की निष्फलता को प्रमाणित करने की उत्सुकता में राम और कृष्ण को मात्र कवियों की कल्पना की उपज कह कर उनको पदावनत करने का प्रयत्न कर रहे हैं। कृष्ण के युग में भी कम-से-कम एक ऐसा व्यक्ति था जिसने उनके अस्तित्व को ही नकार दिया था। (अनूदित)

इतिहास एवं पुराण ४ नवम्बर

ह्नह्न परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज ह्नह्न

इतिहास और तत्त्वमीमांसा

आइए, विषय से हट कर इतिहास और प्रतीक के अर्थों पर थोड़ा विचार करें और इस पर भी सोचें कि इन दोनों महाकाव्यों के पात्रों की तथाकथित अ-ऐतिहासिकता से इनके (महाकाव्यों के) मुख्य उद्देश्य किस प्रकार अप्रभावित रहते हैं। यह धारणा गलत है कि अ-ऐतिहासिकता का अर्थ अस्तित्व का न होना है। इतिहास के प्रति गलत दृष्टिकोण रखने के कारण ही इस गलत धारणा को प्रश्रय मिला है। घटनाओं या पदार्थों का सामाजिक जीवन के सन्दर्भ में ऐतिहासिक या वैयक्तिक महत्त्व है, इस बात को स्वीकार करने के साथ-साथ उन पर एक विश्वव्यापी सन्दर्भ में भी विचार किया जा सकता है।

मानव-मन की आदत है कि वह अनुक्रम में घटित एक के बाद दूसरी घटनाओं पर ही विचार करता है और घटनाओं की इस रेखीय गति को ही इतिहास मान लेता है। इसको हम मन की त्रिविमात्मक परिप्रेक्ष्य (Three Dimensional Perspective) कह सकते हैं। दूसरे शब्दों में हम घटनाओं या वस्तुओं को उनके प्रतिरूपों से असम्बद्ध करके एक स्वतन्त्र इकाई के रूप में देखते हैं और उनके बीच के आन्तरिक, स्वभावगत या मूलभूत सम्बन्धों (कड़ियों) पर ध्यान नहीं देते। यही शास्त्रीय ऐतिहासिक दृष्टि है। राजनैतिक इतिहास की घटनाओं में परस्पर कोई स्वभावगतः सम्बन्ध नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि दिक्काल में घटनाएँ अचानक ही घटित हो जाती हैं और उनके बारे में पहले से कुछ कह सकना कठिन है। लेकिन इतिहास के दार्शनिकों को मालूम है कि यह तथ्य इतिहास का सत्य नहीं है। इतिहास घटनाओं के कारण-कार्य-सम्बन्ध को महत्त्व देता है, जब कि यह सम्बन्ध ब्रह्माण्ड का मात्र आंशिक सत्य है।

आर्थर एडिंगटन के अनुसार कारण-कार्य-सम्बन्ध (Causation) तथा कारणत्व (Causality) में अन्तर है। उसके अनुसार कार्य-कारण-सम्बन्ध का अर्थ है कि कारण कार्य का कालिक पूर्ववर्ती होता है। कारणत्व से उसका तात्पर्य यह है कि ब्रह्माण्ड में घटनाएँ परस्पर असम्बद्ध नहीं हैं। ह्वाइटहेड भी कहता है कि सत्य एक संघटिक प्रक्रिया की तरह होता है। यहाँ इतिहास की त्रिविमात्मक दृष्टि एक विश्वजनीन (Universal) स्थिति के सत्य के आगे घुटने टेक देती है। यद्यपि वैयक्तिकता-प्रधान दृष्टिकोण से यह बात मानसेतर (Extra-Mental) लगेगी, परन्तु यह स्वयं चिन्तकों के मूलभूत स्वभाव में ही निहित है; अतः इस ओर उनका ध्यान ही नहीं जाता। किसी बिन्दु पर मनन करना आवश्यक हैह्नह्नइसका अर्थ यह नहीं है कि यह आवश्यकता हर स्थिति में एक अखण्डनीय सत्य है।

जेम्स जीन के अनुसारह्नह्न''हम यह नहीं कह सकते कि भूतकाल की घटनाओं से ही वर्तमान का

निर्माण होता है। भूत और वर्तमान के वस्तुगत अर्थ नहीं हुआ करते, क्योंकि चार आयामों वाले चतुर्विमात्मक सान्तत्यक (Four-Dimensional Continuum) को भूत, वर्तमान और भविष्य में ठीक-ठीक विभाजित नहीं किया जा सकता। यदि हम यह मानना चाहते हैं कि प्रातिभासिक जगत् की घटनाएँ कारण-कार्य-सम्बन्ध के नियम से संचालित होती हैं, तो हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि ये घटनाएँ उस विश्व के किसी अधःस्तर पर निर्धारित की जाती हैं जो इस प्रातिभासिक जगत् की सीमाओं से परे है।''

ब्रह्माण्ड एक संयुक्त (सम्बद्ध) प्रक्रिया है। यह अन्तरिक्ष में लटके हुए पृथक्-पृथक् पदार्थों का समूह नहीं है। किसी विशेष घटना या पदार्थ को किसी दूसरी विशेष घटना या पदार्थ का कारण नहीं माना जा सकता। ब्रह्माण्ड की अखण्ड प्रक्रिया में प्रत्येक भाग दूसरे भाग में व्याप्त है; अतः प्रत्येक वस्तु कारण और कार्य दोनों ही है। प्रत्येक घटना एक विश्व-व्यापी स्थिति का प्रतिबिम्ब है तथा सम्पूर्ण इकाई से पृथक् किया हुआ कोई भाग नहीं है। घटनाओं के अविभाज्य चैतन्य (जो पदार्थों की सत्ता और अन्तर्वस्तु है तथा जो उनका साक्षी भी है) के निष्कर्षों पर जब हम वैयक्तिक दृष्टिकोण से विचार करते हैं, तभी घटनाओं के कारण-कार्य-सम्बन्धों की प्रतीति होती है। अटूट सान्तत्यक के रूप में इस विश्व-व्यापक सिद्धान्त का कार्य (जब यह व्यक्तियों में अव्यक्त होता है) कारण-कार्य-सम्बन्ध के नियम के रूप में दिखलायी पड़ता है। इस पदार्थमय जगत् में परम तत्त्व की आत्माभिव्यक्ति के कारण पदार्थों में एक जीवन्त सम्बन्ध दीखता है जो कारण-कार्य-सम्बन्ध के रूप में प्रकट होता प्रतीत होता है। अनुभवजन्य जगत् में तो कारण-कार्य-सम्बन्ध का कोई अर्थ है, परन्तु परम तत्त्व के लिए यह सम्बन्ध अर्थहीन है। हमारी यन्त्रवादी इन्द्रियाँ ब्रह्माण्ड के इस अप्रकट उद्देश्य को नहीं समझ सकतीं, यद्यपि इसी लक्ष्य की ओर ही (इस उद्देश्य को समझने हेतु) क्रम-विकास की समस्त प्रक्रियाएँ गतिशील हैं।

योगवासिष्ठ में वर्णित लीला और पद्मा की कथा से इस सत्य का पता चलता है कि एक ही घटना कई तिथियों में, कई स्थानों पर घटित हो सकती है। प्रत्येक घटना एक विश्व-व्यापक घटना है और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के लिए वह युक्ति-युक्त है। भूत, वर्तमान तथा भविष्य का निरपेक्ष रूप से निर्धारण नहीं किया जा सकता (अर्थात् उनकी सर्वस्थानों और समस्त काल-खण्डों में अपरिवर्तनीय रहने वाली निश्चित सीमा-रेखाएँ नहीं होतीं)। एक ही घटना के विभिन्न दिक्कालों में नितान्त भिन्न सन्दर्भों में विभिन्न अर्थ या महत्त्व हो सकते हैं। एक के लिए जो भूत है, दूसरे के लिए भी वह भूत हो, यह आवश्यक नहीं है। यही बात वर्तमान और भविष्य पर भी लागू होती है। किसी भी निश्चित समय में घटित होने वाली कोई स्वतन्त्र घटना भूत, वर्तमान या भविष्य की किस श्रेणी के अन्तर्गत है, इसका निर्धारण इस बात से होगा कि किस दिक्काल के सन्दर्भ में उस पर विचार किया जा रहा है।(अनूदित)

इतिहास एवं पुराण ५ दिसम्बर

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

ब्रह्माण्ड की नियन्ता परम सत्ता के दृष्टिकोण से कोई भी घटना एक ऐसी विश्व-व्यापक प्रक्रिया है जो उस चेतना से अविच्छेद्य है जिसकी परिधि के अन्तर्गत वह घटना घटित हो रही है। दिक्काल स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। यह दो या दो से अधिक घटनाओं के बीच सम्बन्ध जोड़ता है। दिक्काल का यह जगत् (जिसमें हम सब रह रहे हैं) ही एकमात्र सम्भव जगत् नहीं है। विभिन्न सन्दर्भों तथा चेतना के विभिन्न रूपों के अनुसार विभिन्न दिक्कालों वाले विभिन्न जगत् हो सकते हैं। संसार के इतिहास को अन्तिम सत्य के रूप में स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं है। आलोचनात्मक विश्लेषण करने पर वस्तुओं के ऐतिहासिक अस्तित्वों की वास्तविकता उसी प्रकार लुप्त हो जाती है जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश में कोहरा।

जिसे हम इतिहास कहते हैं, वह तथाकथित ऐतिहासिकता से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। किसी ऐतिहासिक पात्र के बारे में स्थूल रूप से इतना ही सोच लिया जाता है कि वह ऐसा व्यक्ति होगा, जिसे उसके काल में भौतिक चक्षुओं से देखा जा सकता होगा। जिसे कभी नहीं देखा गया हो, उसका अस्तित्व अविश्वसनीय माना जायेगा। आज कोई व्यक्ति यह कहने को तैयार नहीं है कि उसने अपनी आँखों से राम या कृष्ण को देखा है, इसलिए हम उनकी वास्तविकता पर सन्देह करने लगे हैं। जिस वस्तु की सत्ता को हम प्रयोगाश्रित या अनुभवजन्य विधियों से तत्काल प्रमाणित नहीं कर सकते, हम उस पर विश्वास ही नहीं करते। तथाकथित ऐतिहासिकता की धारणा से हम इस सीमा तक प्रभावित हैं कि हम यह भूल जाते हैं कि एक निश्चित काल-खण्ड में अनुक्रम से एक के बाद दूसरी घटित होने वाली घटनाएँ ही इतिहास नहीं हैं। ऐन्द्रिक सीमाओं से परे की स्थितियाँ और वास्तविकताएँ भी इतिहास बन सकती हैं।

क्या ईश्वर एक ऐतिहासिक व्यक्ति है? उसके अस्तित्व पर शायद इसीलिए सन्देह किया जाता है कि उसे अनुभवाश्रित इतिहास की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता। क्या विश्व या ब्रह्माण्ड ऐतिहासिक सत्ताएँ हैं? आधुनिक सापेक्षवाद के सिद्धान्त के निष्कर्षों तथा एडिंगटन और ह्वाइटहेड जैसे विचारकों द्वारा प्रस्तुत इस सिद्धान्त की दार्शनिक व्याख्याओं ने विश्व में पायी जाने वाली वस्तुओंजैसे स्थान, स्थूल वस्तुएँ आदिकी अल्पकालिक ऐतिहासिकता की धज्जियाँ उड़ा दी हैं। ऐसी स्थिति में रामायण और महाभारत के पात्रों के ऐतिहासिक अस्तित्व पर सन्देह करते समय हिचकिचाहट का अनुभव वास्तव में होना चाहिए।

वाल्मीकि और व्यास का ज्ञान-क्षेत्र इतिहास की अनुभवाश्रित दृष्टि की सीमाओं से कहीं आगे है। उन्होंने ब्रह्माण्ड को परम सत्य की दृष्टि से देखा।

ऋषि-मुनियों ने ब्रह्माण्ड का जो इतिहास प्रस्तुत किया है, वह अदीक्षित मानव-मन की समझ से परे है। इस इतिहास के निहितार्थ को समझना एक सामान्य व्यक्ति के लिए उतना ही कठिन है, जितना माध्यमिक कक्षा के विज्ञान के विद्यार्थी के लिए आइंस्टीन के सिद्धान्तों को स्वयं पढ़ कर समझना। जो ब्रह्माण्ड-व्यापक परिप्रेक्ष्य में घटनाओं पर विचार नहीं कर सकता, वह इन महाकाव्यों (जिनमें उपनिषदों में उद्घाटित परम तत्त्व की यथार्थता के बाह्य अर्थों की उद्घोषणा है) में निहित सत्यता को भली-भाँति नहीं समझ सकता।

किसी वस्तु का इतिहास यह नहीं है कि किसी विशेष स्थान पर उस (वस्तु) के साथ क्या बीती, वरन् यह है कि समग्र सृष्टि में उसका क्या स्थान है? हमारी सत्ता किसी विशेष स्थान या देश में ही नहीं है। हमारी सत्ता ब्रह्माण्ड में है। हम दर्शक हैं या तीर्थयात्री हैं, विदेशी नागरिक हैं या अमुक, स्वभाव, गुण या चरित्र वाले हैंइत्यह सब हमारे व्यक्तित्व का वर्णन है; परन्तु हम इन सबके अतिरिक्त और कुछ भी हैं। ब्रह्माण्ड में हमारा जो स्थान है, वही हमारा वास्तविक स्थान है। किसी व्यक्ति का अध्ययन करने के लिए हमें ब्रह्माण्ड-सम्बन्धी यही दृष्टिकोण अपनाना होगा, अन्यथा हमारा अध्ययन पूर्ण और विश्वसनीय नहीं रह पायेगा।

वास्तविक अर्थों में जो ऐतिहासिक अध्ययन करता है, वह व्यक्तियों, वस्तुओं या परिस्थितियों को टुकड़ों में विभाजित करके और प्रत्येक टुकड़े को स्वतन्त्र अस्तित्व के रूप में स्वीकार करके उन पर विचार नहीं करता। व्यास जैसे मनीषियों के दृष्टिकोण से किसी व्यक्ति के जीवन-चरित्र में केवल शरीर के समाजशास्त्रीय अस्तित्व का ही नहीं, वरन् शरीर, मन और आत्माइत्यइतीनों का वर्णन होता है। जिस प्रकार हमने अपने सामाजिक सम्बन्धों की परिधि में सारे राष्ट्रों को घेर लिया है, उसी प्रकार हमारी जीवात्माओं की पहुँच अस्तित्व के समस्त स्तरों तक है। यह इतिहास की व्यापक दृष्टि है। 'क्या कृष्ण का अस्तित्व था?' इस प्रकार के प्रश्न इस दृष्टि से विचार करने पर नहीं उठ सकते। जब सृष्टि के समग्र परिप्रेक्ष्य में इस (सृष्टि) पर विचार किया जाता है, तब इसके अन्तर्गत समस्त वस्तुएँ ऐतिहासिक वास्तविकता बन जाती हैं।

यूरोप तथा भारत का इतिहास पढ़ते समय हमारा जो दृष्टिकोण रहता है, उससे नितान्त भिन्न दृष्टिकोण से हमें ब्रह्माण्ड के इतिहास का अध्ययन करना पड़ता है। किसी कवि का कथन है कि जिस प्रकार अन्तरिक्ष के तारकों की व्यवस्था में व्यवधान डाले बिना हम एक पुष्प का स्पर्श तक नहीं कर सकते, उसी प्रकार किसी व्यक्ति की वास्तविकता का मूल्यांकन हम तब तक नहीं कर सकते, जब तक हम व्यापक दृष्टि से इस पर विचार न करें कि सृष्टि में उसका स्थान क्या है? यह बात मानव-प्राणियों पर ही नहीं, संसार के सूक्ष्मातिसूक्ष्म अणु पर भी लागू होती है।

यही इतिहास का आन्तरिक सत्य है। व्यक्ति की वास्तविकता समझने के लिए केवल यही दृष्टिकोण अपनाना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त और कोई वस्तु महाभारत और रामायण के मुख्य पात्रों के ऐतिहासिक अस्तित्व को असत्य सिद्ध नहीं कर सकतीइत्यइभले ही सांसारिक इतिहास के प्रति हमारी भौतिक दृष्टि पर आधारित हमारा दृष्टिकोण क्यों न हो। यदि हम इन

पात्रों के अस्तित्व को प्रमाणित नहीं कर सकते, तो इसका यह तात्पर्य नहीं है कि किसी समय में वे इस धरती पर जन्मे ही नहीं। (अनूदित)

इतिहास एवं पुराण ६

ह्वह्व परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज ह्वह्व

पुराण

पुराण के इतिवृत्त इतिहास) हैं, जिनमें पुरातन इतिहास, मिथकशास्त्र, धार्मिक उपदेश, दर्शन, योग, रहस्यात्मक उपलब्धियों, आध्यात्मिक साक्षात्कार से सम्बन्धित तथा इनसे मिलते-जुलते विषयों पर आधारित सामग्री है।

पुराणों की अधिकतर सामग्री में विष्णु, शिव, देवी, गणेश तथा स्कन्द द्वारा अपने मूल स्वरूपों में अथवा अपनी विभिन्न अभिव्यक्तियों द्वारा किये गये महान् कार्यों का गुणगान किया गया है। ब्रह्मा, सूर्य, वायु का भी पर्याप्त वर्णन किया गया है, यद्यपि वे उपर्युक्त पंच देवों से कम महत्त्व के हैं। कुछ अन्य प्रसंगों का भी समावेश पुराणों में स्थान-स्थान पर संक्षेप या विस्तार से किया गया है। चिकित्साशास्त्र, कला, साहित्य (अलंकार)-शास्त्र, साहित्यिक समालोचना, व्याकरणशास्त्र, नीतिशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, कर्मकाण्ड, जातियों के सामाजिक कानून, वर्णाश्रम, तीर्थयात्रा, धार्मिक प्रतिज्ञाएँ तथा प्रथाएँ, दातव्य उपहार, सांख्ययोग-दर्शन और वेदान्त के बहुरंगे विस्तृत विवरण भी पुराणों की विषय-सामग्री हैं। हृदय को स्पर्श करने वाली भव्य शैली में उन दृढ़-निश्चयी, निर्भीक महापुरुषों के वर्णन हैं जो विवेक से परिपूरित विद्वत्ता, पराक्रम, नैतिक कठोरता, भगवद्-भक्ति तथा आत्म-त्याग के मूर्तिमान आदर्श थे। ये वर्णन सर्वव्यापक सत्यता का सजीव चित्र प्रस्तुत करते हैं। पुरुषार्थ-चतुष्टय के रूप में मानव-आचरण और कर्तव्यों का जो वर्गीकरण पुराणों में किया गया है, वह पुरातन भारत की नीतिदर्शनपरक विचारधारा का प्रतिनिधि तत्त्व है। पुरुषार्थ-चतुष्टय ही धर्मशास्त्रों या स्मृतियों के नियमों-सिद्धान्तों की महत्त्वपूर्ण व्यवस्था का आधार बना है।

पुराणों में वर्णित देवता, ऋषि, राजा, सन्त तथा अपने नैतिक आदर्शों के लिए प्रसिद्ध महापुरुष मानवता के लिए जीवन का निर्माण करने वाली शिक्षा के स्रोत हैं। जहाँ तक पुराणों के पात्रों की ऐतिहासिक सत्यता का प्रश्न है, उन पर भी महाकाव्यों के पात्रों की तरह समग्र सृष्टि के सन्दर्भ में विचार किया जाना चाहिए (कृपया इस अध्याय में देखें पूर्ववर्ती प्रकरणह्वह्वइतिहास की तत्त्वमीमांसा), क्योंकि वे पात्र महाकाव्यों में मुख्य विषयों के अन्तर्गत इंगित विविध प्रसंगों के विचार ही हैं।

मुख्य पुराण संख्या में अठारह हैं। इनमें से ब्रह्मा, विष्णु और शिव में प्रत्येक का गुण-गान करने वाले ६-६ पुराण हैं। बीच-बीच में अन्य देवताओं का भी वर्णन है। दार्शनिक गाम्भीर्य, धार्मिक प्रभावोत्पादकता और मुख्य विषय-सामग्री की दृष्टि से विष्णुपुराण तथा श्रीमद्भागवत मुख्य हैं। श्रीमद्भागवत में सांख्य और वेदान्त-दर्शन पर आधारित सृष्टि-रचना; विष्णु के विभिन्न अवतारों

(जो संख्या में बाईस या चौबीस हैं। इनमें दश मुख्य अवतार भी सम्मिलित हैं); देवताओं और दानवों के वंशों; सृष्टिकर्ता की सन्तानों के रूप में क्रम से विभिन्न राजाओं और ऋषियों, ध्रुव, ऋषभदेव, जड़भरत, अजामिल, प्रह्लाद, गजेन्द्र, अम्बरीष, सुदामा जैसे महान् भगवद्-भक्तों; सांख्य, योग और वेदान्त से सम्बन्धित दार्शनिक उपदेशों (विशेष रूप से कपिल द्वारा देवहूति को तथा श्री कृष्ण द्वारा उद्धव को दिये गये उपदेशों); खगोलविज्ञान (गणित ज्योतिष); भूगोल; वर्णाश्रम धर्म; कल्प; युग तथा चारों प्रकार के प्रलयों के वर्णन हैं।

भागवत के सर्वाधिक मनोहर तथा प्रभावशाली अध्याय वे हैं, जिनमें कृष्ण-चरित्र का वर्णन है। यह वर्णन भारत के अनेक भक्ति-सम्प्रदायों का प्रेरणा-स्रोत रहा है। अपने सार्वजनिक जीवन में योद्धा, राजनीतिज्ञ तथा अध्यापक के रूप में कृष्ण ने जो-जो कार्य किये, उनका वर्णन महाभारत में होने के कारण भागवत के इन अध्यायों में नहीं है (यद्यपि महाभारत की कई घटनाओं का उल्लेख है)। वृन्दावन की गोपियों के साथ की गयी कृष्ण की रासलीला, उनकी बाल-क्रीड़ाएँ (जिनका आध्यात्मिक अर्थ भी है) सबको विस्मित कर देने वाले किशोरावस्था में उनके द्वारा किये गये वीरता और पराक्रम के साहसिक कार्य परवर्ती भक्त कवियों द्वारा रचित साहित्य का आधार हैं। आज भी कृष्ण-भक्तों के मनोभावों को कृष्ण की क्रीड़ाएँ, अद्भुत कार्य और लीलाएँ असीमित रूप से प्रभावित कर रही हैं। पुराणों ने महाकाव्यों की सम्मोहक शक्ति और भव्य छवि को अपने में समाहित कर लिया है। वे वेद-उपनिषदों के सफल प्रतिनिधि हैं।

(अनूदित)

समय बड़ा मूल्यवान् है

संसार में ऐसे लोग भी हैं जो सारे-का-सारा जीवन खाने, पीने और सोने के अतिरिक्त ताश खेलने और शराब पीने में बिता देते हैं। बहुत से लोग ऐसे भी है जिनके जीवन में न तो कोई सिद्धान्त है और न नियम; केवलमात्र समय को बरबाद करना ही उनके मालूम है। मनुष्य की दशा कितनी दयनीय हो चुकी है। लोद धन का होम करने में तनिक भी नहीं हिचकते, साथ-साथ चरित्र

ॐ